Delhi Postal Regd. No. DL (C) - 01/1272/2021-23 R.N.I. No. 72014/99 Posted at LPC Delhi RMS, Delhi-6 Monday & Tuesday

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

अर्हत उवाच

अमणुण्णसमुप्पायं दुक्खमेव विजाणिया।
समुप्पायमजाणंता, किह णाहिंति संवर?

दुःख असंयम से उत्पन्न होता हैयह ज्ञातव्य है। जो दुःख की उत्पत्ति को नहीं जानते वे संवर (दुःख-निरोध) को कैसे जानेंगे?

• नई दिल्ली • वर्ष 22 • अंक 51 • 27 सितंबर - 3 अक्टूबर, 2021 प्रत्येक सोमवार • प्रकाशन तिथि : 25-09-2021 • पेज : 12 • ₹ 10

विकास महोत्सव एवं जैन भगवती दीक्षा समारोह का आयोजन

वर्धमानता विकास का प्रतीक है : आचार्यश्री महाश्रमण

भीलवाड़ा, १५ सितंबर, २०२१

तेरापंथ धर्मसंघ के नवमाधिशास्ता आचार्यश्री तुलसी गंगापुर में भाद्रव शुक्ला नवमी को ही पट्टासीन हुए थे। दशमाधिशास्ता आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी ने गुरुदेव श्री तुलसी को गणाधिपति के अलंकरण से अलंकृत किया और उनके पट्टोत्सव को विकास महोत्सव के रूप में स्थापित किया।

विकास महोत्सव के पावन अवसर पर विकास के पुरोधा एकादशमाधिशास्ता आचार्यश्री महाश्रमण जी ने मंगल पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि एक मंगलकामना या आशीष की भाषा में कहा गया है। वर्धमानता विकास की प्रतीक है। विकास के लिए एक महत्त्वपूर्ण बात होती है कि विकास की दिशा क्या है?

विकास तो गलत दिशा में हो सकता है और सही दिशा में भी हो सकता है। गलत दिशा में विकास या गति हो जाती है, वो एक प्रकार से ह्रास होता है। वास्तव में विकास वह है, जहाँ सही दिशा में गति होती है। संभवतः उसे विकास कहना संगत हो सकता है। विकास की दिशा बताई गई–ज्ञान। ज्ञान के क्षेत्र में विकास करो।

ज्ञान एक पवित्र तत्त्व है। दर्शन में विकास करो। श्रद्धा-रुचि सही हो और वो पुष्ट हो जाए, सम्यक्त्व पुष्ट रहे। जब तक क्षायिक सम्यक्त्व न आ जाए दर्शन का विकास रह सकता है। चारित्र में विकास हो। संयम में विकास हो। क्षांति-सहिष्णुता में विकास हो। मुक्ति-अनासक्ति, निर्लोभता में विकास हो। ये पाँच तत्त्व जो विकास के बताए गए हैं–ज्ञान, दर्शन, चारित्र, क्षांति और मुक्ति, इनमें वर्धमान बनो।

परमपूज्य आचार्य तुलसी जो विकास महोत्सव से जुड़े हुए हैं। यह विकास महोत्सव एक सिंहासन पर विराजमान है। वह सिंहासन है–विसर्जन और त्याग। हमारे धर्मसंघ में आचार्य तुलसी का विशेष कीर्तिमान यह है कि अपनी विद्यमानता में आचार्य पद का विसर्जन कर दिया।

त्याग करना भी बहुत बड़ी बात होती है, फिर सत्ता का त्याग करना। सत्ता का कहीं त्याग करना उपयुक्त हो सकता है, कहीं त्याग न करना भी ठीक हो सकता है। आचार्य तुलसी ने कहा था कि अब मेरा पट्टोत्सव न मनाया जाए। वर्तमान आचार्य का ही पट्टोत्सव मनाया जाता है। आचार्यश्री महाप्रज्ञ ने कहा कि ठीक है, हम आपका पट्टोत्सव नहीं मनाएँगे पर आज के दिन को नहीं छोड़ेंगे। उस दिन को हम तब से लेकर अब तक विकास महोत्सव के रूप में मनाते आ रहे हैं।

परम पूज्य आचार्यश्री तुलसी ने आज ही के दिन ३२ वर्ष पूर्व साध्वीप्रमुखाश्री जी को महाश्रमणी पद पर एवं मुनि मुदित यानी मुझे महाश्रमण के पद पर प्रतिष्ठित किया। यह भी उनका एक विशेष कदम था। नए पद का सृजन किया। यह भी भविष्य के लिए एक पथदर्शन हो गया कि ऐसा भी किया जा सकता है।

मैं उनके प्रति श्रद्धाभाव व्यक्त करता हूँ कि मुझे उन्होंने इस लायक समझा। मुझे भी गुरुदेव तुलसी एवं युवाचार्य-आचार्य महाप्रज्ञ जी की सेवा-चरणोपपात में रहने का अवसर प्राप्त हुआ। सहिष्णुता का हमारा विकास हो। निर्लोभता और अनासक्ति रहे।

(शेष पृष्ठ २ पर)

देवता भी वंदन करते हैं साधु को : आचार्यश्री महाश्रमण

भीलवाड़ा, १५ सितंबर, २०२१

तेरापंथ धर्मसंघ के धर्माधिशास्ता दीक्षा-संयम प्रदाता आचार्यश्री महाश्रमण जी द्वारा आज छः समणीजी का श्रेणी आरोहण एवं एक मुमुक्षुश्री एवं छः मुमुक्षु बहनों को संयम पथ पर स्थापित किया। भगवान महावीर ने संसार में चार बातें दुर्लभ बताई हैं–मनुष्य जन्म, श्रुति, श्रद्धा और संयम में पराक्रम।

दीक्षा संस्कार प्रदान करने से पहले मुमुक्षुओं से व उनके पारिवारिकजनों से मौखिक स्वीकृति ली। समणियों व मुमुक्षु बहनों व भाई से साधु जीवन की चर्या-पालन की स्वीकृति ली। नमस्कार महामंत्र का स्मरण कर, नमोत्थुणं से भगवान महावीर एवं पूर्वाचार्यों का स्मरण किया। सामायिक पाठ से सर्व सावद्य का तीन करण-तीन योग से जीवन पर्यन्त का त्याग करवाया।

पूज्यप्रवर के मंगल मंत्रोच्चार से दीक्षा समारोह प्रारंभ हुआ। दीक्षा कार्यक्रम में सर्वप्रथम पूज्यप्रवर ने अतीत की आलोचना करवाई। केश लोच संस्कार मुनिजी का पूज्यप्रवर ने किया एवं साध्वियों का केश लोचन साध्वीप्रमुखाश्री जी ने किया। पूज्यप्रवर ने फरमाया कि केश लूंचन की प्राचीन परंपरा रही है। केश लूंचन करने से शिष्य की चोटी गुरु के हाथ में आ जाती है। यह एक अनुशासन की परंपरा है।

यह साधु जीवन बड़ा प्राग-संयम का स्वीकरण होता है। साधु राजा-महाराजाओं के लिए भी वंदनीय हो जाता है। साधु देवों द्वारा भी वंदनीय होते हैं। यह इतना ऊँचा स्थान त्याग-संयम का है। भोग से योग की दिशा में आगे बढ़ना होता है। जैन तेरापंथ में तो दीक्षा से पहले शिक्षा-परीक्षा होती है।

एक साधु वो जितना सुख प्राप्त कर सकता है, त्याग से जो सुख मिलता है, वो भोग से नहीं मिल सकता। राग के समान दुःख नहीं, त्याग के समान सुख नहीं। त्याग एक आंतरिक सुख का उपाय है। भोग का सुख अल्पकालिक होता है। त्याग का सुख शाश्वत रूप में रह सकता है।

हमारे धर्मसंघ में संतों में बाल दीक्षाएँ बहुत होती आई हैं। रजोहरण भी अहिंसा का एक माध्यम है। पूज्यप्रवर ने नव दीक्षित मुनि को रजोहरण प्रदान करवाया। साध्वीप्रमुखाश्री जी ने नव दीक्षित साध्वियों को रजोहरण आर्षवाणी के साथ प्रदान करवाया। नामकरण संस्कार पूज्यप्रवर द्वारा किया गया। नवदीक्षितों को नए नाम प्रदान करवाए, जो अलग से दिए गए हैं।

(शेष पृष्ठ २ पर)

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
27 सितंबर-3 अक्टूबर, 2021

✦ *धार्मिक व्यक्ति अपने जीवन में अनासक्त योग की साधना करे।*
—आचार्यश्री महाश्रमण

विषम परिस्थिति में भी चित्त को प्रसन्न रखें : आचार्यश्री महाश्रमण

भीलवाड़ा, १७ सितंबर, २०२१

तेरापंथ धर्मसंघ के सरताज आचार्यश्री महाश्रमण जी ने प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि संक्लेश कई बार पैदा हो सकता है और संक्लेश की स्थिति भी उत्पन्न हो सकती है, रह सकती है। ठाणं के दसवें स्थान के ८६वें सूत्र में दस प्रकार संक्लेश के बारे में बताया गया है। कि किन संदर्भों में और निमित्तों से संक्लेश पैदा हो सकता है।

संक्लेश का पहला प्रकार है—उपधि संक्लेश, उपकरण कपड़ा आदि अनुकूल नहीं मिला तो संक्लेश पैदा हो जाए। संक्लेश यानी बाधित हो जाना, असमाधि का हो जाना, दूसरा है—उपाश्रय संक्लेश, यानी स्थान संबंधी संक्लेश। चिंतन अच्छा हो तो आदमी कम अनुकूल स्थान आदि में रह सकता है।

तीसरा कषाय संक्लेश। कषाय के भाव आ जाएँ तो असमाधि हो सकती है। चौथा है—भक्त-पान संक्लेश। भोजन-पानी के संदर्भ में असमाधि अनेक रूपों में पैदा हो सकती है। पाँचवाँ मन का संक्लेश। कोई निमित्त मिला मानसिक गड़बड़ हो जाए, आधि या अवसाद में चला जाए। वाणी का भी संक्लेश हो जाता है। दूसरों की वाणी या खुद की वाणी से संक्लेश हो जाता है।

सातवाँ है—काय संक्लेश। शारीरिक पीड़ा से संक्लेश हो सकता है। ज्ञान-संक्लेश, ज्ञान की अविशुद्धता। ज्ञान का विकास नहीं हो रहा है, याद नहीं कर पाता है या तत्त्व को नहीं पकड़ पाता है, अनेक रूपों में ज्ञान संक्लेश हो जाता है। दर्शन संक्लेश, दर्शन की शुद्धता नहीं है, सच्चाई के प्रति निष्ठा गहरी नहीं हो पा रही है। देव, गुरु, धर्म के प्रति सम्यक् श्रद्धा नहीं हो पा रही है, अनिर्मलता है, तो दर्शन का संक्लेश इस रूप में हो सकता है।

चारित्र संक्लेश—चारित्र का सम्यक् पालन नहीं करता है, तो चारित्र संबंधी असमाधि हो सकती है। इन्हीं नामों से दस असंक्लेश है। मन को समझा ले, जागरूकता रहे, और संयम की चेतना अच्छी हो तो असंक्लेश की स्थिति भी रह सकती है।

यह असमाधि और समाधि है। ज्यादा समाधि तो आदमी के हाथ में ही है, दूसरे निमित्त भले बन जाएँ। पदार्थ, स्थान या व्यक्ति समाधि असमाधि में थोड़े निमित्त बन सकते हैं, बाकी तो स्वयं ही निमित्त है। आचार्य महाप्रज्ञ जी का वाक्य है—"समस्या और दुःख एक नहीं है। निमित्तों संबंधी समस्या तो है, पर दुःखी होना जरूरी नहीं है। आदमी प्रतिकूल परिस्थितियों में भी शांत-प्रसन्न रह सकता है।"

हमारा मन जितना सध जाता है, फिर परिस्थितियाँ ऐसी-वैसी आ सकती हैं, पर समाधि-असंक्लेश रह सकता है। आदमी यह सोचे मैं दूसरे की असमाधि में निमित्त बनने का प्रयास न करूँ। हो सके तो किसी को समाधि देने का प्रयास करूँ।

भाव और भाषा में अंतर हो सकता है। यह एक दृष्टांत से समझाया। दुनिया में सबसे मीठी वाणी है, जीभ है। दाता कौन? याचक कौन? हाथ की मुद्रा देखो। वाणी से संक्लेश-असंक्लेश हो सकता है, यह भी एक दृष्टांत से समझाया। ज्ञान से भी समाधि हो जाए। स्वाध्याय करते-करते पुस्तक निमित्त बन जाती है, हमारी समाधि हो जाती है। इसलिए ज्ञान भी बड़ा मित्र है कि स्वाध्याय करते-करते चित्त को आनंद मिल सकता है।

इस तरह शास्त्रकार ने दस प्रकार के संक्लेश व दस प्रकार के असंक्लेश बताए हैं। हम ज्ञान आदि असंक्लेश की स्थिति का निर्माण हो सके ऐसा यथोचित्य प्रयास करें, यह काम्य है।

मुख्य नियोजिका जी ने कहा कि विनय से ज्ञान प्राप्त होता है। ज्ञान से दर्शन, दर्शन से चारित्र की प्राप्ति होती है। जो चारित्र को प्राप्त कर लेता है, वह व्यक्ति मोक्ष में जाने का अधिकारी बन जाता है। बुद्धि के चार प्रकारों को विस्तार से समझाया।

साध्वी पुण्यप्रभा जी ने सुमधुर गीत का संगान किया।

समणी प्रतिभाप्रज्ञा जी आदि समणियाँ विदेश लंदन और अमेरिका से पूज्यप्रवर के श्रीचरणों में पहुँची हैं। समणी प्रतिभाप्रज्ञा जी ने अपने यात्रा के अनुभव बताए। समणी पुण्यप्रभा जी आदि समणियों ने गीत की प्रस्तुति दी।

पूज्यप्रवर ने फरमाया कि इस वर्ष का विकास महोत्सव समणियों के लिए मर्यादा महोत्सव जैसा बन गया। लगभग विकास महोत्सव पर ४० समणियाँ थीं। समणी प्रतिभाप्रज्ञा अपनी प्रज्ञा का अच्छा विकास विभिन्न आयामों में करती रहे।

समणी पुण्यप्रज्ञा जी अमेरिका से आई हैं, वापस लंदन जाने की बात है। संगान भी एक अच्छा माध्यम है। साथ वाली दोनों समणियाँ भी अच्छा उपयोग करते रहें। देश में रहें या विदेश में, मूल चारित्र साधना में बने रहें। खूब अच्छा काम करती रहें। संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

जैन भगवती दीक्षा समारोह---

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

पूज्यप्रवर ने गृहस्थों से नव दीक्षितों को वंदना करने का निर्देश प्रदान करवाया। नव दीक्षितों को प्रेरणा प्रदान करवाई। नवदीक्षितों को अनुशासन का आहार प्रवास स्थल पर जाकर दिलाने का निर्देश प्रदान करवाया। नव दीक्षित साध्वियों को साध्वीप्रमुखाश्री जी की देखरेख में व नवदीक्षित मुनि को मुनि दिनेश कुमार जी की निश्रा में आगे बढ़ने व शिक्षण-प्रशिक्षण प्राप्त करने का निर्देश प्रदान करवाया।

पूज्यप्रवर द्वारा सामायिक चारित्र ग्रहण कराने से पहले मुमुक्षु दीक्षा एवं मुमुक्षु संजना ने दीक्षार्थियों का परिचय दिया। पारमार्थिक शिक्षण संस्था के संयोजक बजरंग जैन ने आज्ञा पत्र का वाचन किया। पारिवारिक जनों द्वारा आज्ञा पत्र श्रीचरणों में अर्पित किया।

श्रेणी आरोहण करने वाली समणियों का परिचय समणी मंजुलप्रज्ञा जी ने दिया।

साध्वीप्रमुखाश्री जी ने दीक्षा संस्कार से पूर्व कहा कि आज विकास महोत्सव के ऐतिहासिक दिन पर परम पूज्य आचार्यप्रवर द्वारा आध्यात्मिक अनुष्ठान का समायोजन दीक्षा संस्कार होने वाला है। भारतीय संस्कृति में दीक्षा का अपना महत्त्व है। जैन धर्म की दीक्षा विशेष रूप से महत्त्व रखती है। जैन धर्म के अनुसार दीक्षा है, अपने आपको जानने की परंपरा, जागरूकता की यात्रा, आध्यात्मिक आरोहण की यात्रा।

साध्वीप्रमुखाश्री जी द्वारा कविताओं का संग्रह पूज्यप्रवर के श्रीचरणों में समर्पित किया गया। पूज्यप्रवर ने तपस्या के प्रत्याख्यान करवाए। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

विकास महोत्सव के अवसर पर परम पूज्य आचार्यश्री महाश्रमण जी द्वारा रचित गीत

श्री भैक्षवशासन सुरतरुवर की छांह।
प्रतिदिन प्रोन्नति हो निर्मल मन की चाह।।
ठीक दिशा का निर्धारण हो मानस में उत्साह।।

शुद्ध विवेचन युत चिंतन हो वच में तथ्य प्रवाह।
संयम भावित तप से होता सब पापों का दाह।।

पावन सेवा भाव शुभंकर आत्मोन्नति की राह।
समणोऽहं समणोऽहं स्मृति से हो यतिता निर्वाह।।

स्वाध्याय क्रम रहे व्यवस्थित रह बारह ही माह।
शनिवार सामायिक से हो आभूषित सप्ताह।।

सद्यत्नों से पार करें हम भव का सिन्धु अथाह।
'महाश्रमण' आगम सागर में हो गहरा अवगाह।।
नगर भीलवाड़ा पावस ले आध्यात्मिक वाह-वाह।
गुरु तुलसी पट्टोत्सव दिन की आध्यात्मिक वाह-वाह।।

लय : उपकारी गुरुवर ओ थांरो उपकार---

२१९वें भिक्षु चरमोत्सव के अवसर पर परम पूज्य आचार्यश्री महाश्रमण जी द्वारा रचित गीत

जिनशासन पंचानन को मेरा सविनय शत वन्दन।
श्रद्धास्पद श्रीचरणों में अर्पित श्रद्धा का चन्दन।।

सिरियारी में विभुवर ने शुभ अनशन ग्रहण किया था।
भाद्रव शुक्ला तेरस को फिर अन्तिम श्वास लिया था।
वह पराक्रमी पुरुषोत्तम आस्थास्पद दीपानन्दन।।१।।

सब साधु और साध्वीगण सौहार्द भाव को रखना।
दीक्षार्थी की अच्छे-से वैरंगिक वृत्ति परखना।
वैरागी के भीतर हो वैराग्य-भाव का स्पन्दन।।२।।

मर्यादाओं का बन्धन निःश्रेयस्कर लगता है।
आगम-स्वाध्याय ध्यान से आत्मार्थीपन जगता है।
चरमोत्सव पर विभुवर! लो सम्मानयुक्त अभिनन्दन।।३।।

यह मेदपाट की धरती यह नगर भीलवाड़ा है।
द्विशताधिक साधु-साध्वियाँ बहती संयम धारा है।
वर 'महाश्रमण' गतिमय हो प्रतिपल भैक्षवगण स्यन्दन।।४।।

लय : ओ मेरे वतन के लोगों, जरा याद करो कुर्बानी---

वर्धमानता विकास का...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

आज के विकास महोत्सव में तेरापंथ विकास परिषद का भी योग है। मांगीलाल सेठिया इसके संयोजक हैं। बुद्धमल दुगड़, बनेचंद मालू व पद्मचंद पटावरी इसके सदस्य हैं। ये अपना आध्यात्मिक चिंतन-मंथन समाज को दे सकते हैं। नैकितका, आध्यात्मिकता, धार्मिकता पुष्ट होती रहे।

विकास महोत्सव और मर्यादा महोत्सव दो महोत्सव हैं। तीसरा महोत्सव तेरापंथ स्थापना दिवस है। ये हमारे संघीय संदर्भ में प्रतिष्ठित दिवस हैं। विकास महोत्सव के अवसर पर स्वरचित गीत—श्री भैक्षव शासन सुरतरुवर की छाँव---। का सुमधुर संगान किया।

पूज्यप्रवर ने विकास महोत्सव के आधार पत्र का वाचन किया। यह पत्र आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी द्वारा वि०सं० २०५१ भाद्रवा शुक्ला नवमी को दिल्ली में प्रतिष्ठित किया गया था। चारित्रात्माओं की नई मर्यादावली का संस्करण पूज्यप्रवर ने तैयार किया है। उसके बारे में पूज्यप्रवर ने फरमाया। पूज्यप्रवर ने चतुर्मास के पश्चात चारित्रात्माओं के विहार के निर्देश फरमाए।

साध्वीवर्या जी ने विकास के बारे में बताया। साध्वी चारित्रयशा जी ने सुमधुर गीत का संगान किया।

तेरापंथ विकास परिषद के सदस्य पद्मचंद पटावरी ने अपनी अभिव्यक्ति दी। स्थानीय महिला मंडल द्वारा गीत की प्रस्तुति दी गई। संघगान के साथ विकास महोत्सव कार्यक्रम का समापन हुआ।

तत्त्व के प्रति यथार्थ श्रद्धा रखनी चाहिए : आचार्यश्री महाश्रमण

भीलवाड़ा, १३ सितंबर, २०२१

महामनीषी, महातपस्वी आचार्यश्री महाश्रमण जी ने प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि शास्त्रकार ने मिथ्यात्व के दस प्रकार प्रत्यक्त किए हैं।

अधर्म में धर्म मान लेना जैसे हिंसा को धर्म मान लो। मोक्ष के संदर्भ में हिंसा करना, अहिंसा-अचौर्य नियम धर्म है, उनको अधर्म मान लेना।

अमार्ग में मार्ग की संज्ञा। ये दस में पाँच युगल है। मोक्ष मार्ग है–ज्ञान, दर्शन, चारित्र और तप है। इसके सिवाय कोई अचारित्र-अदर्शन आदि में मोक्ष मार्ग है, ऐसा मंतव्य मनन कर लें। जैसे कोई मान ले नहीं ज्ञान-दर्शन, चारित्र आदि मोक्ष मार्ग नहीं है। अजीव में जीव की संज्ञा। कोई कह दे यह पट्ट जीव है।

असाधु को साधु मान ले। जो वास्तव में साधु नहीं है, उसको साधु मान लेना। जहाँ परिग्रह हिंसा जिसके जीवन में है, वो असाधु है। साधु को असाधु मानना जो स्नान नहीं करते, संतान पैदा नहीं करते वे क्या साधु हैं? अमुक्त में मुक्त की संज्ञा। जो मोक्ष में गए नहीं हैं, अमुक्त हैं, उनको मुक्त मान लेना। मुक्त को अमुक्त मान लेना। जो मुक्त हो मोक्ष में चले गए हैं, उनके लिए कह देना कि मुक्ति आदि कुछ नहीं है, मैं नहीं मानता। ये मिथ्यात्व-सम्यक्त्व के संदर्भ में आयाम है।

यथार्थ से विपरीत मान्यता मिथ्यात्व हो जाती है।

देव, गुरु, धर्म के संदर्भ में भी बात आती है। अदेव में देव की संज्ञा कर ले धर्म की दृष्टि से तो वो उसको धर्म की दृष्टि वाला देव मान ले। अदेव में देव बुद्धि मिथ्यात्व हो गई। जो गुरु नहीं है, साधु नहीं है, उसको जो गुरु मान लेता है। अगुरु में गुरु की मान्यता करना। ये मिथ्यात्व होता है। अध्यात्म, धर्म और व्यवहार के संदर्भ में भी यथार्थ बोध होना अच्छी बात होती है।

अतत्त्व में तत्त्व की श्रद्धा, जो जैसा नहीं है, उसको वैसा मान लेना, यह मिथ्याथ्व हो जाता है। यथार्थ दृष्टिकोण है, वह आदमी का सम्यक् दृष्टिकोण होता है। सम्यक्त्व की प्राप्ति होना बड़ी बात है। संसार के अनंत प्राणी प्रथम गुणस्थान में विद्यमान है। संसार में अनंत जीव चौदह गुणस्थानों से ऊपर उठ चुके हैं। ऐसे भी मनुष्य हैं, जो छठे गुणस्थान से लेकर चौदहवें गुणस्थान में रहते हैं, रह सकते हैं।

पंचम गुणस्थान तो मनुष्य और तिर्यंच पंचेंद्रिय में होता है। पशु भी श्रावक बन सकते हैं। देव और नारक चार गुणस्थानों से आगे नहीं बढ़ सकते। प्राणियों के लिए मूल बात है कि मिथ्यात्व से उठकर सम्यक्त्व की भूमिका पर आरूढ़ हो। सम्यक्त्व चारित्र के बिना भी हो सकता है, पर चारित्र सम्यक्त्व के बिना नहीं हो सकता।

सम्यक्त्व बड़ा रत्न है, इसके बिना चारित्र भी नहीं आ सकता। जिनको दोनों प्राप्त हो जाए, उनका तो कहना ही क्या? अभव्य जीव भी ऊपरी तौर पर आचार का पालन कर लेता है, पर सम्यक्त्वहीन है, उसमें शुद्ध चारित्रात्मा ही नहीं है। अभव्य जीव कोई अच्छी क्रिया करता है, उसको भी फल मिलता है। नव ग्रैवेयक तक अभव्य जीव जाकर पैदा हो सकता है। श्रावक बारहवें देवलोक से ऊपर पैदा नहीं होता है।

अभव्य जीव साधु संस्था में चला जाता है। कईयों को दीक्षा दे देते हैं। पर खुद का कल्याण उस रूप में नहीं होता जो भव्य संसारी प्राणी करते हैं। मिथ्यात्व ऐसी चीज है कि जिससे कई जीव सम्यक्त्व को प्राप्त होते ही नहीं।

मुख्य नियोजिका जी ने सम्यग दर्शन के महत्त्व बताते हुए कहा कि जिसमें सम्यक् ज्ञान नहीं है, वह ज्ञानी नहीं है। अज्ञानी सम्यक्त्व से ज्ञानी बन जाता है। ईसा मसीह और अंधे व्यक्ति के दृष्टांत से समझाया। सम्यक् ज्ञान को मोक्ष का कारण बताया गया है। हम अज्ञान से ज्ञान की दिशा में आगे बढ़ें।

साध्वी निधिप्रभा जी ने सुमधुर गीत की प्रस्तुति दी।

उपासक श्रेणी प्राध्यापक उपासक निर्मल कुमार नौलखा ने अपनी भावना अभिव्यक्त की।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

बारह व्रत कार्यशाला

रायपुर।

अभातेयुप के निर्देशन में तेयुप द्वारा तेरापंथ अमोलक भवन में मुनि दीप कुमार जी के सान्निध्य में बारह व्रत कार्यशाला का आयोजन किया गया। मुनिश्री ने सविस्तार बारह व्रतों की जानकारी दी। मुनिश्री ने उपस्थित समाजजनों को प्रेरणा देते हुए कहा कि हम बड़े-बड़े व्रत नहीं धारण कर सकते तो यह बारह व्रत धारण कर अपने जीवन का कल्याण करना चाहिए।

उपस्थित श्रावक-श्राविकाजनों ने बारह व्रत को धारण करने के साथ ही संकल्प पत्र भरने का निर्णय लिया। मुनि काव्य कुमार जी ने गीतिका के माध्यम से प्रेरणा प्रदान की।

अर्हम्

● **साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभा** ●

(१) विकासोत्सव का यह त्योहार
बना है पट्टोत्सव आधार।
आर्यवर महाप्रज्ञ उपकार
हो रहा इससे गण गुलजार।।

(२) द्वितीया कार्तिक की श्रीकार
उजालों की शुभ हुई फुहार।
आ गए तुलसी बन अवतार
उदित मानो विधु सौम्याकार।।

(३) देखकर तुलसी का दीदार
मिला माँ को मुक्ता-भंडार।
ज्येष्ठ भ्राता सारे दिलदार
सहज पाया बहनों का प्यार।।

(४) सीख शाला का शिष्टाचार
बढ़ाई ज्ञानार्जन रफ्तार।
देख प्रतिभा में नया निखार
बनाया मॉनीटर दमदार।।

(५) लाडनूं में गुरु-साक्षात्कार
हृदय से जुड़ा हृदय का तार।
प्रकट कोई पिछला संस्कार
उत्स की खोज महादुश्वार।।

(६) जगा मन में सपना सुकुमार
बसाऊँ चरणों में संसार।
करूँ निज आत्मा का उद्धार
बताए माँ को हृदयोद्गार।।

(७) मिला चम्पक मुनि का सहकार
मगन मुनि करुणा का ना पार।
खुला श्री गुरुवर का दरबार
मनोरथ करना है साकार।।

(८) बहन क्यों भटके भव-कान्तार
दिया उसकी दीक्षा का तार।
भ्रात मोहन को खुशी अपार
सुना जब भगिनी का निस्तार।।

(९) कहा माँजी के चरण जुहार
बनाना क्या सबको अनगार?
सहम बोली माँ साहस धार
तुझे सौंपा पूरा अधिकार।।

(१०) अभी तो मेरा नहीं विचार
अनुज की वय कच्ची अवधार।
करूँगा चिन्तन समय निहार
करे क्यों कोई फिर तकरार?

(११) खड़े हो प्रवचन में इक बार
हौसले का लेकर हथियार।
करूँ ना मैं विवाह-व्यापार
कराओ त्याग मुझे करतार!

(१२) त्याग तुलसी! तीखी तलवार
समझपूर्वक करना स्वीकार।
आज में खुद करता इकरार
करो प्रभु! मेरी नैया पार।।

(१३) हुए सुन मोहन चित्राकार
छोड़ देगा तुलसी घर-बार।
रोकना अब इसको बेकार
प्रार्थना की गुरु से साभार।।

(१४) पूज्यश्री कालू करुणागार
निवेदन करके अंगीकार।
शीघ्र दीक्षित कर किया विहार
अचानक फला भाग्य मन्दार।।

(१५) मिली शिक्षाएँ विविध प्रकार
सध गया समुचित साध्वाचार।
अर्हता ने पाया विस्तार
हस्तगत लघु वय में गणभार।।

(१६) बन गए तुलसी पहरेदार
शुरू की शासन की संभार।
कसे वीणा के उलझे तार
शून्य में प्राणों का संचार।।

(१७) विरोधों के अनगिनत प्रहार
कभी ना मानी उनसे हार।
मिला बेहद आदर-सत्कार
नहीं छू पाया अहं लिगार।।

(१८) विलक्षण वाणी का इजहार
विलक्षण गीतों की झंकार।
विलक्षण गलती पर फटकार
विलक्षण थी उनकी पुचकार।।

(१९) विलक्षण थे वे सिरजनहार
विलक्षण था उनका व्यवहार।
लगाया ग्रंथों का अम्बार
पढ़ें हम उनको बारम्बार।।

(२०) तेज जब बहता वलयाकार
दुःख दुविधा कर देता क्षार।
अनाड़ी ढह जाता अनिवार
हुआ पैदा सबमें इतबार।।

(२१) स्निग्धता के प्रभु पारावार
बरसते थे बन धारासार।
विकस्वर होते दिल-कचनार
धरा-अम्बर में जय-जयकार।।

(२२) किया सक्षम प्रतिनिधि तैयार
सौंप उसको गण की पतवार।
बने गुरुवर तुलसी निर्भार
विकासोत्सव उसका उपहार।।

✦ *दया पापों से बचाने वाला रक्षाकवच होता है। वह संसार समुद्र से पार पहुँचाने वाली नौका है।*
– आचार्यश्री महाश्रमण

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
27 सितंबर-3 अक्टूबर, 2021

✦ *आदमी का समय किसी को दुःख देने, डराने आदि में प्रयुक्त न हो। उसका समय दूसरों का कल्याण करने में नियोजित हो।*
—आचार्यश्री महाश्रमण

महिला मंडल के विविध आयोजन

तत्त्व विज्ञ परीक्षा

बालोतरा।

साध्वी मंजुयशा जी के सान्निध्य में तेरापंथ भवन में अभातेममं के निर्देशानुसार आचार्यश्री तुलसी शिक्षा परियोजना के अंतर्गत तत्त्व विज्ञ परीक्षा का आयोजन तेरापंथ महिला मंडल द्वारा किया गया। सर्वप्रथम सभी परीक्षार्थियों को साध्वीश्री जी के द्वारा मंगलपाठ सुनाया गया। परीक्षा केंद्र व्यवस्थापिका विमला गोलेछा ने साध्वीश्री जी के सान्निध्य में परीक्षा पेपर खोले। महिला मंडल अध्यक्ष निर्मला संकलेचा और मंत्री संगीता बोथरा की साक्षी से पेपर खोले गए। इस परीक्षा में ८ परीक्षार्थियों ने भाग लिया।

पिछले साल हुए तत्त्वज्ञान की परीक्षा का प्रमाण पत्र व पुरस्कार सम्मान समारोह का कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसके साथ पिछले २ सालों में ऑल इंडिया लेवल पर प्रथम स्थान तमन्ना भंडारी, शिल्पा छाजेड़ और द्वितीय स्थान अनीता गोलेछा को अभातेममं से प्राप्त मोमेंटों और स्थानीय स्तर पर भी सम्मानित किया गया। बाकी सभी परीक्षार्थियों को प्रथम, द्वितीय, तृतीय एवं सांत्वना पुरस्कार भी दिए गए। इस अवसर पर निवर्तमान अध्यक्ष अयोध्या देवी ओस्तवाल, उपाध्यक्ष चंद्रा बालड़, कोषाध्यक्ष उर्मिला सालेचा, सहमंत्री इंदु भंसाली, रेखा बालड़, प्रचार-प्रसार मंत्री पुष्पा सालेचा और कमला देवी ओस्तवाल भी उपस्थित थे। उपाध्यक्ष रानी बाफना ने भी परीक्षा दी।

दंपति कार्यशाला

ज्ञानबाग कॉलोनी।

साध्वी निर्वाणश्री जी के सान्निध्य में दंपति कार्यशाला का आयोजन किया गया। सभा, तेममं की संयुक्त समायोजना व तेयुप एवं टीपीएफ की संभागिता के साथ यह दंपति कार्यशाला शानदार रही।

साध्वी निर्वाणश्री जी ने कहा कि आज में आत्मा-परमात्मा व धर्म-कर्म की चर्चा न करके जीवन पर विमर्श कर रही हूँ। आराधना कौन कर सकता है-जिसका मन शांत हो, जिसके जीवन में सामंजस्य हो। साधना का पथ विसंबंध का पथ है। कार्यशाला की मुख्य वक्ता साध्वी डॉ० योगक्षेमप्रभा जी ने अपने वक्तव्य में 'जिंदगी में रिश्तों की मिठास कैसे घोले' विषय पर मार्मिक प्रस्तुति दी। 'मिठास' कार्यशाला में जीवन में मिठास घोलने वाले मुद्दों पर विस्तार से विवेचन हुआ।

साध्वी लावण्यप्रभा जी, साध्वी कुंदनयशा जी, साध्वी मुदितप्रभा जी एवं साध्वी मधुरप्रभा जी ने गीत की प्रस्तुति दी। कार्यशाला में उपस्थित दंपतियों ने अपनी संगीतमय प्रस्तुति गीत से दी। टीपीएफ से मोहित बैद ने समागत दंपतियों को शुभकामनाएँ प्रेषित की। तेयुप उपाध्यक्ष प्रमोद भंडारी ने सामायिक अभिव्यक्ति दी। कन्या मंडल की कन्याओं ने भिक्षु अष्टकम की प्रस्तुति से मंगलाचरण किया। ज्ञानशाला प्रशिक्षिकाओं व तेमम की बहनों ने लघु नाटिका से परिवार-पति-पत्नी एवं रिश्तों की सुंदर प्रस्तुति दी।

इस अवसर पर सभा के पूर्व अध्यक्ष राजकुमार सुराणा, करणी सिंह बरड़िया, तेयुप के पूर्व अध्यक्ष राहुल श्यामसुखा, तेयुप से ऋषभ मेहता, अणुव्रत समिति के सहमंत्री विजयराज आंचलिया, ज्ञानबाग कॉलोनी से कमल भंडारी आदि ने जीरा, राई, तिल, घी आदि के मुहावरों का प्रयोग करते हुए जीवन को मधुर बनाने की व्याख्या की।

धन्यवाद ज्ञापन कार्यशाला के संयोजक मयूर बोरड़ ने किया। मंच संचालन सभा के मंत्री सुशील संचेती ने किया।

कल्याण मंदिर एवं चौबीसी कंठस्थ प्रतियोगिता का आयोजन

चेन्नई।

साध्वी अणिमाश्री जी के सान्निध्य में केंद्र द्वारा निर्देशित तेरापंथ महिला मंडल के तत्त्वावधन में कल्याण मंदिर एवं चौबीसी प्रतियोगिता का आयोजन रखा गया। साध्वी अणिमाश्री जी ने विशेष प्रेरणा प्रदान करते हुए कहा कि प्रतियोगिता एक माध्यम है ज्ञानार्जन करने की। अगर ज्ञान पाने की पिपासा होती है तो वह भाग ले लेता है। कंठस्थ ज्ञान को बढ़ाना है। साध्वीश्री जी ने उपस्थित बहनों को कल्याण मंदिर एवं चौबीसी कंठस्थ करने की दिशा में आगे बढ़ने का संकल्प भी करवाया।

साध्वी मैत्रीप्रभा जी ने प्रतियोगियों को चौबीसी एवं कल्याण मंदिर के श्लोक पूछे। कार्यक्रम का संचालन सहमंत्री कंचन भंडारी ने किया। धन्यवाद रीमा सिंघवी ने किया। इस प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त किया रेखा बाफना एवं सुमित्रा श्यामसुखा, द्वितीय स्थान प्राप्त किया पिंकी गैलड़ा, तृतीय स्थान पर सुभद्रा लुणावत एवं दमयंती बाफना रहे। सभी विजेताओं का सम्मान महिला मंडल के द्वारा किया गया।

आर्ट गैलेरी की प्रदर्शनी

राजाराजेश्वरी नगर।

शासनश्री साध्वी कंचनप्रभा जी के सान्निध्य में महिला मंडल की संयोजना में कन्याओं ने 'आर्ट गैलेरी' आकर्षक शैली से प्रस्तुत किया। मंडाला आर्ट में भिक्षु अष्टकम, चार गतियों, पर्युषण के अष्ट दिवस–खाद्य संयम दिवस, सामायिक दिवस, जप दिवस, ध्यान दिवस आदि पर अद्भुत कलाकृति बनाई। मंत्री सीमा छाजेड़, कन्या मंडल प्रभारी सुधा दुगड़, सह-प्रभारी पूनम दुगड़ का भी श्रम सराहनीय रहा। संयोजिका प्रेक्षा सुराणा, सह-संयोजिका आर्य संचेती एवं सभी कन्याओं का श्रम एवं समय इस गैलरी में नियोजित है।

शासनश्री साध्वी कंचनप्रभा जी ने कहा कि महिला मंडल की अध्यक्षा लता बाफना के निर्देशन में कन्या मंडल ने हस्तलिखित रचनाओं के द्वारा आर्ट गैलरी के माध्यम से जन-जन को आकर्षित किया है। यह गैलरी अपने आपमें अलग ही है। शासनश्री साध्वी मंजुरेखा जी ने कहा कि आर्ट गैलरी अपने आपमें एक अलौकिक उपलब्धि है।

धार्मिक अंताक्षरी का आयोजन

मदुरै।

स्थानीय तेरापंथ भवन में मुनि अर्हत कुमर जी के सान्निध्य में तेरापंथ महिला मंडल के तत्त्वावधान में धार्मिक अंत्याक्षरी प्रतियोगिता का आयोजन किया। मुनिश्री की प्रेरणा से ५ राउंड्स रखे गए, जिसमें सभी ने उत्साह से भाग लिया। प्रथम स्थान चंद्रकांता कोठारी, लता कोठारी एवं बबिता लोढ़ा को मिला, दूसरा स्थान अनुपमा बोथरा, मधु पारख, आस्था बोथरा और तृतीय स्थान मधु जीरावला, शारदा बुरड़, संतोष कोठारी को मिला।

अध्यक्ष नयना पारख एवं मंत्री दीपिका फुलफगर ने रोचक तरीके से प्रतियोगिता करवाई। मुनि अर्हत कुमार जी ने सभी को प्रेरणा दी कि हमें गीतिका के माध्यम से भक्ति करते हुए मन के भावों को शुद्ध कर अपने लक्ष्य को प्राप्त करना चाहिए।

नि:शुल्क कैंप का आयोजन

कालांवाली।

तेमम द्वारा स्वर्ण सुधा किरण चेरिटेबल आई हॉस्पिटल, कालांवाली की टीम एवं डॉ० करन सारवाल के सहयोग से आँखों की जाँच का निःशुल्क कैंप आचार्यश्री तुलसी महाप्रज्ञ होम्योपैथिक हस्पताल, पुरानी तेरापंथी जैन सभा, पुरानी मंडी, कालांवाली पर लगाया गया।

कैंप की शुरुआत अभातेयुप संस्कारक व उपासक पुष्पराज कोठारी, बालोतरा द्वारा नमस्कार महामंत्र के वाचन से की गई। उद्घाटन के समय तेरापंथ महिला मंडल, कालांवाली की संरक्षक देवा कीर्ति गर्ग, अध्यक्षा सीमा वर्मा, कोषाध्यक्ष रविता सिंगला के अलावा अणुव्रत समिति कालांवाली के अध्यक्ष संजीव वर्मा व तेरापंथी महासभा कोलकाता के कार्यकारिणी सदस्य दिनेश गर्ग उपस्थित रहे। कैंप में ८३ मरीजों की जाँच की गई।

संगीत प्रतियोगिता का आयोजन

जीन्द।

तेरापंथ सभा भवन में शासनश्री साध्वी कुंथुश्री जी के सान्निध्य में टीपीएफ के तत्त्वावधान में संगीत प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। साध्वी कुंथुश्री जी ने नमस्कार महामंत्र से कार्यक्रम का शुभारंभ किया। साध्वी सुमंगलाश्री जी ने मंगलाचरण किया। टीपीएफ के अध्यक्ष बी०एस० गर्ग ने सभी श्रोताओं का स्वागत भाषण के से किया।

साध्वी कुंथुश्री जी ने कहा कि संगीत में वह शक्ति है जो मूर्च्छित चेतना में भी नव संचार भर देती है। संगीत एक कला है जो तमस भरे वातावरण को आलोकित करती है। संगीत टेलीपेथी है जो भयंकर बीमारियों का शमन करती है। संगीत तनाव मुक्ति का सरलतम उपाय है। प्रतियोगियों ने सुंदर संगीत की प्रस्तुति दी। सभी प्रतियोगी पूरी तैयारी के साथ कंठस्थ करके आए थे। इस कार्यक्रम की तैयारी में सर्वाधिक श्रम साध्वी सुलभयशा जी का रहा। निर्णायक की भूमिका पूनम वर्मा ने निभाई। प्रथम स्थान रक्षिता जैन, मीना गर्ग का रहा। दूसरा स्थान सीमा जैन तथा तृतीय स्थान राजेश जैन, संयम जैन का रहा। कार्यक्रम को सफल बनाने में डॉ० अनिल जैन, डॉ० सुरेश जैन का अथक परिश्रम रहा। कार्यक्रम का संचालन कुणाल मित्तल ने किया।

मनुष्य निर्माण से संसार निर्माण कार्यशाला

बोइनपल्ली।

साध्वी मधुस्मिता जी के सान्निध्य में 'मनुष्य निर्माण से संसार निर्माण' विषय पर कार्यशाला आयोजित की गई। साध्वी मधुस्मिता जी ने नमस्कार महामंत्र का उच्चारण कर समारोह का शुभारंभ किया।

अणुव्रत कार्यशाला में साध्वी मधुस्मिता जी ने कहा कि संसार का मूल है-मनुष्य। मनुष्य के निर्माण से संसार का निर्माण संभव है। अणुव्रत एक ऐसा कारखाना है, जिसमें अच्छे मनुष्य का निर्माण होता है। अणुव्रत समिति की महिला सदस्यों द्वारा अणुव्रत गीत गायन द्वारा मंगलाचरण से कार्यक्रम प्रारंभ हुआ।

अध्यक्ष प्रकाश एच० भंडारी ने स्वागत वक्तव्य प्रस्तुत करते हुए इस अवसर पर पधारे मुख्य वक्ता डॉ० अरविंद नाहटा व अन्य सभी संस्थाओं के पदाधिकारियों, अतिथियों का स्वागत किया तथा साध्वीश्री जी के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की। सभी संस्थाओं की ओर से बोईनपल्ली चातुर्मास व्यवस्था संयोजक सतीश दुगड़ ने अणुव्रत समिति, हैदराबाद को शुभकामनाएँ दी। मंत्री अशोक मेड़तवाल ने मुख्य वक्ता डॉ० अरविंद नाहटा का परिचय प्रस्तुत किया।

मुख्य वक्ता डॉ० अरविंद नाहटा ने इस अवसर पर अपने विचार व्यक्त किए। कोषाध्यक्ष प्रकाश कोठारी ने धन्यवाद ज्ञापित किया। उपाध्यक्ष सरोज भंडारी ने कार्यक्रम का संचालन किया। अणुव्रत समिति, हैदराबाद द्वारा मुख्य वक्ता का साहित्य द्वारा सम्मान किया गया। कार्यक्रम को संपादित करने में प्रचार मंत्री रीटा सुराणा का विशेष सहयोग रहा।

अभातेयुप योगक्षेम योजना

योगक्षेम

सत्र 2019-21

✲ अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् मुम्बई साथीगण	(₹75,00,000)
✲ अभातेयुप प्रबंध मंडल सत्र 2017-19	(₹31,00,000)
✲ श्री मदनलाल महेन्द्र तातेड़, मुम्बई	(₹13,00,000)
✲ श्री कन्हैयालाल विकासकुमार बोथरा, लाडनूं-इस्लामपुर	(₹11,00,000)
✲ श्री अशोक श्रेयांश बरमेचा, तारानगर-हैदराबाद	(₹11,00,000)
✲ श्री फतेहचंद-संतोष देवी, धीरज, पूजा, अर्हम सेठिया, लुधियाना	(₹5,51,000)
✲ श्री सागरमल दीपक श्रीमाल, देवगढ़-बड़ौदा	(₹5,00,000)
✲ श्री उमरावमल, प्रमोद, महेन्द्र, नरेन्द्र छाजेड़, रामगढ़ शेखावाटी-कोलकाता-जयपुर	(₹5,00,000)
✲ श्री माणकचंदजी सतीशजी ललितजी चोरड़िया (अमराईवाड़ी ओढ़व)	(₹5,00,000)

आत्म शुद्धि का साधना का पर्व है - पर्युषण

रोहिणी, दिल्ली।

खाद्य संयम दिवस : शासनश्री साध्वी रतनश्री जी ने कहा कि दो प्रकार के पर्व होते हैं—आध्यात्मिक और भौतिक। यह पर्व जागृति का मंत्र सीखाने वाला, त्याग-तपस्या की सरिता बहाने वाला अध्यात्म जगत में प्रवेश करने वाला पर्व है।

शासनश्री साध्वी सुव्रतां जी ने खाद्य संयम के संदर्भ में कहा कि प्रत्येक साधना का प्रारंभ खाद्य संयम की साधना से होता है। मंत्र साधना, तंत्र साधना, स्वास्थ्य साधना, साहित्य साधना आदि। कार्यक्रम का शुभारंभ साध्वी सुमनप्रभा जी ने अंतकृद्दशा सूत्र के वाचन से किया। साध्वी कार्तिकप्रभा जी, साध्वी चिंतनप्रभा जी ने गीत से मंगलाचरण किया।

स्वाध्याय दिवस : शासनश्री साध्वी रतनश्री जी ने कहा कि सभी धर्मों में प्रणाम करने का अलग-अलग तरीका है। जैन धर्म में साध्वियों को प्रणाम करने को वंदना शब्द से अभिहित किया जाता है। साध्वी चिंतनप्रभा जी ने कहा कि स्वाध्याय एक रसायन है इसके प्रयोग से आत्मा हृस्ट-पुष्ट बनती है, ज्ञान का आवरण दूर होता है। आत्मज्ञान की ज्योति से आत्मा ज्योतित होती है। टीपीएफ से जुड़े नंदलाल जैन ने अपने विचार व्यक्त किए।

सामायिक दिवस : तेरापंथ भवन में तेयुप ने विजय गीत का संगान कया। तेयुप के अध्यक्ष विकास जैन ने अभिनव सामायिक में भाग लेने वाले श्रावक-श्राविकाओं का स्वागत किया।

साध्वी चिंतनप्रभा जी ने प्रारंभ में त्रिपदी वंदना का प्रयोग एवं लोगस्स का ध्यान करवाया।

शासनश्री साध्वी रतनश्री जी ने अभिनव सामायिक के अंतर्गत दीर्घ श्वास प्रेक्षा, स्वाध्याय के क्रम में गीत का संगान, त्रिगुप्ति की साधना का प्रयोग कराया। महिला मंडल अध्यक्षा मंजु देवी ने अपने विचार व्यक्त किए। प्रवीणा सिंघी ने समागत महिला मंडल, तेयुप का स्वागत किया।

वाणी संयम दिवस : शासनश्री साध्वी रतनश्री जी ने मर्यादा पत्र का वाचन करते हुए कहा—आचार्य भिक्षु ने तेरापंथ धर्मसंघ का शिलान्यास मर्यादा के आधार पर किया।

साध्वी चिंतनप्रभा जी ने वाणी संयम पर अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि वाणी से व्यक्तित्व की पहचान होती है। ललित श्यामसुखा ने गीत प्रस्तुत किया। तेरापंथी सभा, दिल्ली के अध्यक्ष जोधराज बैद, महामंत्री डालमचंद बैद ने अपने विचार व्यक्त किए।

अणुव्रत चेतना दिवस : पर्युषण पर्व के पाँचवें दिन के कार्यक्रम का शुभारंभ सभा के मंत्री सुरेंद्र नाहटा, मनोज बरमेचा, राजेश बैंगाणी एवं नगराज बुच्चा ने गीत से किया।

शासनश्री साध्वी रतनश्री जी ने कहा कि अणुव्रत में व्यक्ति सुधार से विश्व सुधार तक की क्षमता है। यह वर्ण, जाति, संप्रदाय से मुक्त है। इसको प्रत्येक जाति, संप्रदाय का व्यक्ति ग्रहण कर सकता है।

साध्वी सुमनप्रभा जी ने अपनी भावाभिव्यक्ति में अनैतिकता और अप्रामाणिकता के संदर्भ में कई घटनाओं का जिक्र किया। अणुव्रत समिति के भूतपूर्व अध्यक्ष श्रीचंद संचेती ने अपने विचार व्यक्त किए एवं मनोज बरमेचा ने प्रस्तुति दी।

जप दिवस : शासनश्री साध्वी रतनश्री जी ने भगवान महावीर के जीवन का शुभारंभ करते हुए कहा कि कोई भी व्यक्ति जन्म से महान नहीं होता। धीरे-धीरे साधना-आराधना करता हुआ विकास के सर्वोच्च शिखर पर पहुँच सकता है।

साध्वी कार्तिकप्रभा जी ने कहा कि जप में बहुत बड़ी-बड़ी शक्तियाँ हैं एवं ऊर्जा है। इससे अनेकानेक समस्याओं का समाधान हो सकता है। सर्वश्रेष्ठ मंत्र है - नमस्कार महामंत्र।

ध्यान दिवस : शासनश्री साध्वी सुव्रता जी ने कहा कि प्रेक्षाध्यान का अर्थ है—अतीत और अनागत से मुक्त होकर वर्तमान में जीना। प्रियता-अप्रियता से मुक्त होकर समता में जीना, चिंता और व्यथा से मुक्त होकर चेतना के शुद्ध धरातल पर जाना।

संवत्सरी महापर्व : शासनश्री साध्वी रतनश्री जी ने कहा कि आज का दिन समग्र जैन समाज में बड़े उत्साह के साथ मनाया जाता हैं। वर्ष भर किए दोषों की आलोचना करके व्यक्ति निर्मल, पावन एवं शुद्ध बन जाते हैं।

शासनश्री साध्वी सुव्रतांजी ने अपने उद्‌गार व्यक्त किए। भिक्षु मंडल के सदस्यों एवं साध्वी कार्तिकप्रभा जी, साध्वी चिंतनप्रभा जी ने गीत प्रस्तुत किया।

क्षमायाचना दिवस : शासनश्री साध्वी रतनश्री जी ने क्षमायाचना समारोह में कहा—आज का दिन निष्पत्ति का दिन है। आज तक आपने कोई अकृत किया है। दुश्चिंतन किया है अथवा दुर्वचन का प्रयोग किया है तो ऋजुमना बनकर क्षमायाचना कर लें तो पर्युषण महापर्व मनाना अधिकतम सार्थक होगा।

शासनश्री साध्वी सुव्रतांजी ने कहा कि मुक्ति प्राप्त करने के लिए क्षमा की साधना मुख्य द्वार है। वैर-विरोध के जहर को शांत करने के लिए अमृत की धारा है।

तेरापंथी सभा, रोहिणी के अध्यक्ष मदनलाल जैन, तेयुप के उपाध्यक्ष संजीव जैन, दिल्ली तेरापंथी सभा के मंत्री सुरेंद्र नाहटा, दिल्ली महिला मंडल की सदस्या प्रवीणा सिंघी, नागलोई सभाध्यक्ष अमित जैन, पश्चिम विहार सभाध्यक्ष श्यामलाल जैन ने विचार व्यक्त करते हुए क्षमायाचना की। कार्यक्रम का संचालन रोहिणी सभा कोषाध्यक्ष पराग जैन ने किया।

पर्युषण पर्व कार्यक्रम

अध्यात्म साधना केंद्र, महरौली।

शासनश्री साध्वी शशिरेखा जी के सान्निध्य में अध्यात्म साधना केंद्र, महरौली में पर्युषण पर्व पूरे आध्यात्मिक उल्लास के साथ मनाया गया। साध्वी शशिरेखा जी ने पर्युषण मनाने का महत्त्व, चातुर्मास में धर्माराधना का महत्त्व, हाजरी वाचन, आचार्य भिक्षु की मर्यादाएँ व अनुशासन, कालचक्र-उत्सर्पिणी व अवसर्पिणी काल की विशेषताएँ, ठाणं सूत्र के आधार पर श्रावकों के प्रकार, वंदना का महत्त्व, भगवान ऋषभ काल, भगवान महावीर के भवों का चित्रण, संस्मरणों के माध्यम से किया। अनेक श्रावकों की जीवनी से सबको प्रतिबोध दिया। साध्वी शीतलयशा जी ने उत्तराध्ययन-परिषहों पर व्याख्यान दिया।

साध्वी कांतप्रभा जी ने प्रति दिवस के महत्त्व पर गीतिका का संगान किया। साध्वी शीतलयशा जी, साध्वी कांतप्रभा जी, साध्वी रोहितप्रभा जी, साध्वी मंदारयशा जी ने प्रभावक आचार्य व प्रतिदिन विषयों पर अपनी प्रस्तुति दी। अनेक श्रावक-श्राविकाओं ने गीतिकाएँ गाईं। सभी सभा-संस्थाओं के पदाधिकारियों ने अपनी योजनाओं के बारे में विस्तृत जानकारी दी। संवत्सरी के पावन दिन प्रवचन, पौषधोपवास से श्रावक समाज ने लाभ लिया। क्षमायाचना के साथ नौ दिनों तक आयोजित पर्युषण आराधना सानंद संपन्न हुई।

उपासक कार्यशाला

साहुकारपेट, चेन्नई।

साध्वी अणिमाश्री जी के सान्निध्य में तेरापंथ सभा की आयोजना में उपासक कार्यशाला का आयोजन किया गया। साध्वीश्री ने कहा कि उपासक जहाँ अपनी ज्ञानाराधना को बढ़ाते हैं, वहीं दूसरों की कर्म निर्जरा में भी सहयोगी बनते हैं।

उपासक श्रेणी प्रभारी जयंतीलाल सुराणा ने साध्वीश्री के लिए कृतज्ञता ज्ञापित की। टीपीएफ के अध्यक्ष राकेश खटेड़ ने जैन दर्शन, तेरापंथ आचार-विचार के साथ सामान्य जानकारी दी। सभी उपासकों ने अपने विचारों का आदान-प्रदान किया। कार्यशाला में जयंतीलाल सुराणा, पदमचंद आंचलिया, मांगीलाल पितलिया, स्वरूपचंद दांती, धनराज मालू, राजश्री डागा ने सहभागिता निभाई।

संस्कृति का संरक्षण - संस्कारों का संवर्द्धन
जैन विधि - अमूल्य निधि

सगाई कार्यक्रम

कांकरोली।

कांकरोली निवासी मुकेश कोठारी-उषा कोठारी की सुपुत्री उर्वशी कोठारी एवं राजनगर राजस्थान निवासी राजेंद्र जैन एवं अरुणा जैन के सुपुत्र विनय जैन की सगाई संस्कार संस्कारक धनेंद्र कुमार मेहता एवं मनीष कुमार पगारिया ने जैन संस्कार विधि से करवाया।

इस अवसर पर तेरापंथ समाज के पूर्व अध्यक्ष भीकम कोठारी, सुरेश नवलखा, राकेश टुकलिया, हिम्मत मेहता, रमेश कोठारी, विनोद कोठारी, सुनील चव्हाण, मदन चव्हाण उपस्थित रहे।

पाणिग्रहण संस्कार

साउथ हावड़ा।

चुरू निवासी, साउथ हावड़ा प्रवासी पदमसिंह सुराणा के सुपुत्र अमित सुराणा एवं टमकोर निवासी आलोक चोरड़िया की सुपुत्री सौभाग्यवती का पाणिग्रहण संस्कार जैन संस्कार विधि से अभातेयुप संस्कारकद्वय मालचंद भंसाली एवं बजरंगलाल डागा ने सविधि मंत्रोच्चार से संपन्न करवाया। तेयुप के अध्यक्ष बीरेंद्र बोहरा ने मंगलभावना यंत्र वर-वधू के हाथों से स्थापित करवाया एवं दोनों परिवारों को वैवाहिक प्रमाण पत्र एवं मंगलभावना यंत्र भेंट किया।

सुराणा एवं चोरड़िया परिवार ने तेयुप एवं संस्कारकों का आभार ज्ञापन किया।

नामकरण संस्कार

चेन्नई।

गंगाशहर निवासी, चेन्नई प्रवासी किरणचंद छाजेड़ के सुपुत्र अंकुर-सोमली छाजेड़ के पुत्र रत्न की प्राप्त हुई। जिसका नामकरण संस्कार जैन संस्कार विधि से जैन संस्कारक नथमल आच्छा ने मंगल मंत्रोच्चार कर सविधि संपन्न करवाया।

उपस्थित पारिवारिकजनों ने शुभकामनाएँ दी।

नामकरण संस्कार

पुणे।

स्व० सूचित गीडिया व सुमन गीडिया (राजलदेसर निवासी-पुणे प्रवासी) के पुत्र मोहित गीडिया-संग पूजा गीडिया के पुत्र रत्न की प्राप्ति हुई। जिसका जैन संस्कार विधि द्वारा विधिवत् नमस्कार महामंत्र व मंगलमंत्रोच्चार के साथ नामकरण संस्कार संपादित किया गया एवं आगामी एक वर्ष के लिए त्याग-प्रत्याख्यान भी करवाया गया। संस्कारक के रूप में प्रशांत चोरड़िया, नवीन लालानी, सह-संस्कारक के रूप में रोशन चोरड़िया एवं परिवारजन के अनेक सदस्य उपस्थित थे।

नूतन गृह प्रवेश

टी-दासरहल्ली।

टी-दासरहल्ली प्रवासी नानालाल, परेश नंगावत एवं पारिवारिक सदस्यों की उपस्थिति में नूतन निवास का गृह प्रवेश जैन संस्कार विधि द्वारा संपन्न हुआ। तेयुप परिवार ने नंगावत परिवार को मंगलभावना पत्रक भेंट किया।

इस अवसर पर तेरापंथ ट्रस्ट अध्यक्ष नवरत्नमल गांधी एवं तेयुप अध्यक्ष कुशल बाबेल ने अपने विचार व्यक्त किए। राजेश देरासरिया ने एवं प्रचार-प्रसार मंत्री कैलाश गिलुंडिया ने सह-संस्कारक की भूमिका निभाई।

नूतन गृह प्रवेश

जयपुर।

निशा-अशोक चोरड़िया (सुपुत्र सुशीला देवी-तेजकरण चोरड़िया) के जैन संस्कार विधि से गृह प्रवेश कार्यक्रम संस्कारक श्रेयांस बैंगानी ने पूरे विधि-विधान से मंत्रोच्चार का संगान करते हुए संपन्न करवाया।

कार्यक्रम में तेयुप अध्यक्ष राजेश छाजेड़, निवर्तमान अध्यक्ष श्रेयांस बैंगानी, जैन संस्कार विधि संयोजक विनीत सुराणा, कार्यसमिति सदस्य कुलदीप बैद, प्रकाश मालू ने परिषद परिवार की ओर से चोरड़िया परिवार को मंगलभावना पत्रक भेंट किया।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
27 सितंबर-3 अक्टूबर, 2021

✦ *राजनेता के लिए तीन कर्तव्य माने जाते हैं–सज्जन की सुरक्षा, दुर्जनों पर नियंत्रण व जनता की अपेक्षाओं की संपूर्ति करना।*
–आचार्यश्री महाश्रमण

आत्मा के आसपास

❑ आचार्य तुलसी ❑

प्रेक्षा : अनुप्रेक्षा

ध्यान प्रशिक्षण की व्यवस्था

साधक गुरु सान्निध्य में निशिदिन करे निवास।
तब ही उसकी साधना पाए सतत विकास।।
गमन-स्थान-आसन-शयन-भोजन-भाषण योग।
दिन-निशि-चर्या में रहे, गुरु-इंगित अनुयोग।।

प्रश्न : ध्यान का प्रशिक्षण पाने के लिए एक सफल मार्गदर्शन की अपेक्षा को नकारा नहीं जा सकता। वह मार्गदर्शक गुरु के रूप में जिज्ञासु साधकों का पथदर्शन करता है। शिष्य को गुरु के पास निरंतर रहना जरूरी है या यदा-कदा उनका मार्गदर्शन लेकर आगे बढ़ा जा सकता है।

उत्तर : प्राचीन साहित्य में गुरु की उपासना का बहुत महत्त्व रहा है। उपासना का अर्थ है–पास में बैठना। गुरु के पास बैठने वाला, उनकी उपासना करने वाला जिस तत्त्व को प्राप्त कर सकता है, उसे दूर रहने वाला नहीं पा सकता। उपासना करने वाले साधक को केवल सुनने या जानने का ही संयोग नहीं मिलता, गुरु के आभामंडल का आलोक भी मिलता है। गुरु के आभामंडल की सीमा में प्रवेश करते ही शिष्य को अतिरिक्त शांति का अनुभव होता है। गुरु के अमित वात्सल्य से जीवन को नई दिशा मिलती है और परिवर्तन की संभावनाएँ पुष्ट हो जाती हैं। प्रयोगों की इस शृंखला में पश्चिम जर्मनी में एक प्रयोग हुआ है। वहाँ युवा-पीढ़ी को धूम्रपान के व्यसन से मुक्त करने के लिए योग का प्रशिक्षण दिया जा रहा है। फ्रांस में मादक पदार्थों के सेवन की आदत छुड़ाने के लिए लंबी समुद्री-यात्राओं का प्रयोग हो रहा है। एक प्रयोग में ऐसे बीस व्यक्तियों को लंबी सागर यात्रा पर भेजा गया। कहा जाता है कि उनमें से तेरह व्यक्तियों की आदतें सुधर गई। क्लेवलेण्ड (अमेरिका) के पुलिस-प्रमुख क्रुक ने अपने अधीन काम करने वाले पुलिस कर्मियों को सुधारने के लिए एक नया तरीका खोजा है। उसने उन लोगों को छूट दी है कि वे पहरे पर जाने के समय अपनी पत्नियों को साथ ले जाएँ। कहा जाता है कि उन लोगों में पत्नी के सामने नशीली वस्तु का उपयोग करने का साहस ही नहीं रहता।

उक्त प्रयोग कल्पित नहीं हैं। सिद्धांत और व्यवहार की कसौटी पर वे खरे उतरे हैं। जैन-दर्शन के अनुसार द्रव्यातिक्रांत, क्षेत्रातिक्रांत, कालातिक्रांत और भावातिक्रांत होने पर चेतन और अचेतन दोनों प्रकार के पदार्थों में आश्चर्यकारी परिवर्तन हो जाता है। एक सचेतन पदार्थ क्षेत्रातिक्रांत या कालातिक्रांत होकर अचेतन बन सकता है, इससे अधिक परिवर्तन और क्या हो सकता है? उक्त प्रयोगों में जर्मनी का प्रयोग द्रव्यातिक्रांत का उदाहरण बन सकता है। फ्रांस का प्रयोग क्षेत्रातिक्रांत का निदर्शन बन सकता है और अमेरिका का प्रयोग भावातिक्रांत का सूचक है। इसी प्रकार कालातिक्रांत से होने वाला परिवर्तन भी प्रयोग का विषय बन सकता है।

इन प्रयोगों से भी अधिक सफल प्रयोग है–गुरु की सन्निधि का। गुरु के सान्निध्य में उसके आभामंडल के प्रभाव से व्यक्तित्व का जैसा रूपांतरण होता है, वह भी कम विस्मयकारक नहीं होता। इस प्रयोग में गुरु शक्तिपात करे या नहीं, एक प्रकार से सहज शक्तिपात हो जाता है। पुस्तकों को आधार बनाकर ध्यान की विधि सीखी जा सकती है पर वह परोक्ष प्रशिक्षण की प्रक्रिया है। गुरु का प्रशिक्षण प्रत्यक्ष होता है। प्रत्यक्ष और परोक्ष प्रशिक्षण में जितना अंतर है, उतना ही अंतर उसके परिणाम में है। इस दृष्टि से गुरु की प्रत्यक्ष उपासना का अतिरिक्त मूल्य है।

प्रश्न : गुरु की प्रत्यक्ष सन्निधि का प्रभाव अनिर्वचनीय होता है, इसमें विप्रतिपत्ति जैसी कोई बात नहीं है। पर जिस साधक को केवल ध्यान का प्रशिक्षण पाना है, उसके लिए दिन-रात गुरु के पास रहने की क्या अपेक्षा है? समय-समय पर प्राप्त प्रशिक्षण से क्या साधना का वांछित परिणाम नहीं आ सकता?

उत्तर : ध्यान दो प्रकार का होता है–सामयिक और समयातीत। सामयिक ध्यान समय की सीमाओं में बँधा हुआ होता है। वह दिन में एक बार, दो बार या चार-पाँच बार किया जा सकता है। समय की दृष्टि से इसमें दो-चार घंटे लग जाते हैं। किंतु समयातीत ध्यान में समय का कोई अनुबंध नहीं रहता। क्योंकि जिस व्यक्ति में आत्मोपलब्धि की तड़प तीव्र हो जाती है, वह किसी समय में बंधता नहीं, समय उसके साथ बह जाता है। ध्यान का साधक एक-दो घंटा ध्यान में रहे और शेष समय अध्यान में रहे, चंचलता में रहे, यह वांछनीय नहीं हो सकता। यह वही स्थिति है, जो आज के धर्म की है। धर्म-स्थान में जाकर व्यक्ति प्रथम श्रेणी का धार्मिक बन जाता है, पर व्यवहार में धर्म का कोई प्रभाव नहीं रहता। यह दोहरी मानसिकता की स्थिति न धर्म को उजागर कर सकती है और न धार्मिक को एक सच्चे धार्मिक की प्रतिष्ठा दे सकती है। उपासना-काल और आचरण-काल में द्वैध जब तक बना रहेगा, धर्माराधना का अभीष्ट परिणाम नहीं आ सकेगा। ध्यान-साधक का चित्त भी ध्यान से भावित होना चाहिए। ध्यान का प्रभाव समूचे दिन और समूचे जीवन पर होना चाहिए। ध्यान जीवन की समग्रता है। उसे देश और काल-खंडों में विभाजित नहीं किया जा सकता। उसका प्रभाव सुबह जागरण से लेकर रात्रि में शयन तक की हर प्रवृत्ति पर होना चाहिए–चलना, बैठना, ठहरना, सोना, बोलना, खाना, पीना आदि जितनी प्रवृत्तियाँ होती हैं, उन सब पर ध्यान की पुट होने से ही व्यवहार में साधना की निष्पत्ति आ सकती है। इसी बात को ध्यान में रखकर साधना के विभिन्न रूपों का निर्धारण किया गया है–गमन-योग, स्थान-योग, निषीदन-योग, आसन-योग, शयन-योग, भाषण-योग, भोजन-योग आदि। शब्दों में योग शब्द का प्रयोग इस तथ्य का प्रतीक है कि कोई भी क्रिया जागरूकता के साथ जुड़कर योग बन जाती है।

(क्रमशः)

साँसों का इकतारा

❑ साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा ❑

(१७)

क्रांति के स्वर में अगर मुझको पुकारो
मान लूँ मझधार को भी मैं किनारा
बूँद से विस्तार सागर का वरूँगी
पा सकूँ सहयोग जो अविकल तुम्हारा।।

भोर की हर किरण मुझसे पूछती है
रोशनी का रथ यहाँ उतरा कहाँ से
सूर्य ने भेजा मुझे ही तम निगलने
ज्योति का झरना बहा फिर किस जहाँ से
देखकर मौसम मधुर मन मुस्कुराता
हो रहा साकार हर सपना कुँवारा।।

तुम फरिश्ते हो कि मानव हो धरा के
नहीं कुछ भी समझ में आया अभी तक
काफिला अनुराग का क्यों बढ़ रहा है
कहो कुछ तो समझने का है हमें हक
कर रही आह्वान मंजिल हर डगर पर
क्या किसी पथ में उसे तुमने निहारा।।

गीत की अनुगूंज जब सुनती तुम्हारी
जनम जाता है स्वयं ही गीत कोई
झाँकती जब तरल नयनों में तुम्हारे
प्राप्त हो जाती स्वयं पहचान खोई
स्वप्न चाहों का सलोना मैं बुनूँगी
नींद को कर दो अगर तुम कुछ इशारा।।

अगम खुशियों का लगा मेला यहाँ पर
गन्ध गम की पार सागर के गई है
हो भले सब कुछ अजाना या पुराना
मौन आस्था हृदय की सबसे नई है
कर रही इसको निछावर आज तुम पर
है नहीं इससे अधिक उपहार प्यारा।।

(१८)

रहे तैरते सदा सतह पर हम जीवन की
तल के मोती चुनने का उत्साह जगाया
देख सामने रात प्रलय की भटक गया मन
तभी सृजन का तुमने उजला प्राप्त उगाया।।

विघटित मूल्यांकन सारे मन में कड़वाहट
बदल गई हैं जीवन की सब परिभाषाएँ
नए-पुराने संदर्भों में है टकराहट
जाग उठी मानव में कैसी प्रत्याशाएँ
तूफानी लहरों ने तट का बंधन तोड़ा
उसके रिसते घावों को तुमने सहलाया।।

चरण चाँद पर टिका चुका है मानव अपने
प्राणों की पीड़ा को पर किसने पहचाना
अभिनिवेश का अंधकार आँखों के आगे
कम्पन है कदमों में देख पंथ अनजाना
राह मिली गति भी मन को विश्वास मिला है
जीवन के मूल्यों का तुमने पाठ पढ़ाया।।

युग के दर्पण में बिम्बित इतिवृत्त समूचा
जड़ता को मुस्कानों का वरदान मिला है
दी उड़ने की प्यास विंकल प्राणों के खग को
देख सामने मुक्त गगन मन-कमल खिला है
सपनों की दुनिया में सहज भ्रमण हो जाता
पर यथार्थ का आश्वासन तुमसे ही पाया।।

टिके तुम्हारी जहाँ देवते! दिव्य निगाहें
मान रहे उसको ही हम तो अपनी मंजिल
चरणचिह्न ये अंकित होंगे जिन राहों में
फूल खिलेंगे वहाँ भले हो पथ वह पंकिल
युग की सभी अपेक्षाओं को समझा तुमने
युगप्रधान पद से युग ने सम्मान बढ़ाया।।

(क्रमशः)

संबोधि

❑ **आचार्य महाप्रज्ञ** ❑

आज्ञावाद

भगवान् प्राह

(१) आज्ञायां मामको धर्म, आज्ञायां मामकं तपः।
आज्ञामूढा न पश्यन्ति, तत्त्वं मिथ्याग्रहोद्धताः।।

भगवान् ने कहा—मेरा धर्म आज्ञा में है, मेरा तप आज्ञा में है। जो मिथ्या आग्रह से उद्धत हैं और आज्ञा का मर्म समझने में मूढ़ हैं, वे तत्त्व को नहीं देख सकते।

आज्ञा शब्द का व्युत्पत्ति-लभ्य अर्थ है—'आ-समन्तात् जानाति' विषय को पूर्णरूप से जानना। साधारणतया उसका प्रयोग आदेश देने के अर्थ में होता है। विषय का ज्ञान दो प्रकार से किया जाता है—आत्म-साक्षात्कार से और श्रुत से। दूसरे शब्दों में ज्ञान दो प्रकार का होता है—प्रत्यक्ष और परोक्ष। प्रत्यक्ष ज्ञान अतीन्द्रिय और परोक्ष ज्ञान इंद्रिय, मन और शास्त्रजन्य है। प्रत्यक्ष ज्ञान के अभाव में अवलंबन शास्त्र-आगम हैं। परोक्ष का स्वरूप-निरूपण आगम से होता है। बंधन और मुक्ति का विवेक भी वह देता है।

आगम शास्ता की वाणी है। शास्ता वे होते हैं जो वीतराग हैं। राग-द्वेष-युक्त व्यक्ति की वाणी प्रमाण नहीं होती। उसमें पूर्वापर की संगति नहीं मिलती। शास्ता की वाणी में अविरोध होता है। वे सब जीवों के कल्याण के लिए प्रवचन करते हैं। वे प्रवचन आगम का रूप ले लेते हैं। शास्ता के अभाव में वे ही मार्ग-दर्शक होते हैं। इसलिए उनकी वाणी आज्ञा है। वह आज्ञा यह है—

सबको समान समझो। किसी का हनन, उत्पीड़न मत करो।
राग-द्वेष पर विजय करो।
कषायों का उपशमन और क्षय करो।
इंद्रिय और मन पर अनुशासन करो।
संयम का विकास करो।
अहिंसा की परिधि में रहो।
आत्मा के विशुद्ध स्वरूप का चिंतन करो।

भेद-दृष्टि से शास्ता और शास्त्र दो हैं और अभेददृष्टि से एक। आज्ञा का अनुसरण वीतराग का अनुसरण है और वीतराग का अनुसरण आज्ञा का अनुसरण है। 'मामेकं शरणं व्रज'—एक मेरी शरण में आ—गीता के इस वाक्य की भी यही ध्वनि है। भगवान् कहते हैं—आज्ञा की कसौटी पर खरा उतरने वाला ही मेरा धर्म है और मेरा तप है। यह अभेदोपचार है।

आग्रह के दो रूप हैं—सत्य और मिथ्या। मिथ्या आग्रह बौद्धिक जड़ता है। मिथ्या आग्रही अपनी मान्यता के घेरे से मुक्त नहीं हो सकता। 'मेरा धर्म है वही सत्य है'—मिथ्या आग्रही व्यक्ति में इसकी अधिकता होती है। वह अपना ही राग आलापता है। सत्याग्रही में यह नहीं होता। वह नम्र होता है, सरल होता है, सत्य को देखता है, सुनता है, मस्तिष्क से तोलता है और सत्य को स्वीकार करता है। आत्मा का सान्निध्य उसे प्राप्त होता है। वह आग्रही नहीं होता। उसका घोष होता है—जो सत्य है वह मेरा है।

(क्रमशः)

अवबोध

❑ **मंत्री मुनि सुमेरमल 'लाडनूं'** ❑

(२) दर्शन (सम्यक्त्व) मार्ग

प्रश्न-२१ : क्या क्षायक सम्यक्त्वी उपशम श्रेणी पर चढ़ सकता है?
उत्तर : क्षायक सम्यक्त्वी क्षपक व उपशम, दोनों श्रेणियों पर चढ़ सकता है।

प्रश्न-२२ : क्या क्षयोपशम सम्यक्त्वी श्रेणी ले सकता है?
उत्तर : क्षयोपशम सम्यक्त्वी दोनों ही श्रेणी नहीं ले सकता।

प्रश्न-२३ : जीव एक भव में कितनी बार श्रेणी आरोहण कर सकता है?
उत्तर : जीव एक भव में उपशम श्रेणी दो बार ले सकता है, पर क्षपक श्रेणी एक बार ही आती है। एक बार उपशम श्रेणी लेने के बाद उस भव में क्षपक श्रेणी पर आरोहण नहीं होता—यह प्रवचनसारोद्धार का अभिमत है। कर्म ग्रंथ के अनुसार एक बार उपशम श्रेणी लेने के बाद उस भव में क्षपक श्रेणी पर आरोहण कर सकता है।

(क्रमशः)

उपासना

(भाग - एक)

❑ **आचार्य महाश्रमण** ❑

आचार्य श्याम (प्रथम कालकाचार्य)

जैन इतिहास में कालकाचार्य नाम के कई आचार्य हुए हैं। तीन व चार आचार्य तो काफी प्रसिद्ध हैं।

प्रथम कालकाचार्य श्यामाचार्य नाम से अधिक प्रसिद्ध हैं। ये द्रव्यानुयोग के विशिष्ट व्याख्याता थे। इनका निगोद संबंधी ज्ञान तलस्पर्शी था। प्रज्ञापना सूत्र की रचना इनकी गहन विद्वत्ता का प्रमाण है।

एक बार महाविदेह क्षेत्र में सीमन्धर स्वामी से सूक्ष्म निगोद की व्याख्या सौधर्मेन्द्र ने सुनी और प्रश्न किया—'भगवन्! भरत क्षेत्र में भी निगोद संबंधी इस प्रकार की व्याख्या करने वाले कोई मुनि, श्रमण, उपाध्याय या आचार्य हैं?'

सौधर्मेन्द्र के प्रश्न का समाधान करते हुए सीमन्धर स्वामी ने आचार्य श्याम के नाम का उल्लेख किया। सौधर्मेन्द्र वृद्ध ब्राह्मण के रूप में आचार्य श्याम के पास आया। उनके ज्ञान का परीक्षण करने के लिए उसने अपना हाथ उनके सामने किया। हस्त-रेखा के आधार पर आचार्य श्याम ने जाना—'नवागन्तुक ब्राह्मण की आयु पल्योपम से ऊपर है।' आचार्य श्याम ने उसकी ओर गंभीर दृष्टि से देखा और कहा—'तुम मानव नहीं, देव हो।' सौधर्मेन्द्र को आचार्य श्याम के इस उत्तर से संतोष मिला एवं निगोद के विषय में विस्तार से जानना चाहा। आचार्य श्याम ने निगोद का सांगोपांग विवेचन कर इंद्र को आश्चर्याभिभूत कर दिया। अपनी यात्रा का रहस्य उद्घाटित करते हुए सौधर्मेन्द्र ने कहा—'मैंने सीमन्धर स्वामी से जैसा विवेचन निगोद के विषय में सुना था, वैसा ही विवेचन आपसे सुनकर मैं अत्यंत प्रभावित हुआ हूँ।'

देवों की रूप संपदा को देखकर कोई शिष्य श्रमण निदान न कर ले, इस हेतु भिक्षाचर्या में प्रवृत्त मुनियों के आगमन से पूर्व ही सौधर्मेन्द्र श्यामाचार्य की प्रशंसा करता हुआ जाने लगा। तब श्यामाचार्य अपने शिष्यों को सिद्धांतों के प्रति अधिक आस्थाशील बनाने की दृष्टि से बोले—'सौधर्मेन्द्र! देवागमन की बात मेरे शिष्य बिना किसी सांकेतिक चिह्न के कैसे जान पाएँगे?' आचार्य देव के संकेत का अनुशीलन करते हुए सौधर्मेन्द्र ने उपाश्रय का द्वार पूर्व से पश्चिमाभिमुख कर दिया। आचार्य श्याम के शिष्य गोचरी करके लौटे। वे इंद्रागमन से लेकर द्वार के स्थानांतरण तक की सारी घटना सुनकर विस्मयाभिभूत हो गए।

इंद्रागमन की यह घटना प्रभावक चरित्र के कालकसूरि प्रबंध में आचार्य कालक के साथ एवं विशेषावश्यक भाष्य, आवश्यक चूर्णि आदि ग्रंथों में आचार्य आर्यरक्षित के साथ भी प्रयुक्त हैं।

इनका आचार्य काल वी०नि० २३५ माना जाता है।

आचार्य कालक (द्वितीय)

कालककुमार धारा नगरी के स्वामी वैरसिंह के सुपुत्र थे। इनकी माता का नाम था सुरसुंदरी। गुणाकर मुनि के उपदेश से प्रभावित होकर अपनी बहन सरस्वती के साथ संयम व्रत स्वीकार किया। गुणाकर सूरि ने इन्हें सुयोग्य समझकर आचार्य पद पर आरूढ़ किया। एकदा आचार्य कालक उज्जयिनी के उपवन में विराजमान थे। आचार्य कालक की बहन आर्या सरस्वती साध्वी-समुदाय के साथ आचार्य की वंदना करने उपवन की ओर जा रही थी। राजमहल में बैठे राजा गर्दभिल्ल ने साध्वी सरस्वती को जाते देखा। अपना आपा भूलकर मुग्ध हो उठा। कामान्ध बना। तत्काल साध्वी को महलों में बुला लिया। सरस्वती रक्षा की पुकार करने लगी पर कौन सुने। आचार्य कालक ने जब यह दुःसंवाद सुना तब राजमहल में पहुँचकर गर्दभिल्ल को बहुत समझाया। पर वह हठी कब मानने वाला था। प्रत्युत कुपित होकर अपने सेवकों से आचार्य को बाहर निकालने के लिए कहा। आचार्य को क्रोध आना सहज था। गर्दभिल्ल को राज्यच्युत करने की घोषणा करके राज्यसभा से निकल गए। आर्या सरस्वती का कहीं राजा अहित न कर दे यह सोचकर कुछ दिन तो विक्षिप्त से बने राजपथ पर घूमते रहे। जब राजा को विश्वास हो गया कि 'कालक' वास्तव में ही विक्षिप्त हो गए हैं तब मौका देखकर वहाँ से चलकर भड़ौंच आ गए।

(क्रमशः)

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
27 सितंबर-3 अक्टूबर, 2021

✦ *भौतिक विकास के बिना नगर, प्रांत और राष्ट्र परिपूर्ण विकास वाला नहीं बन सकता।*

—आचार्यश्री महाश्रमण

तप अभिनंदन के आयोजन

तप अभिनंदन कार्यक्रम

कैथल।

साध्वी विशदप्रभा जी के सान्निध्य में तेरापंथ भवन में तपस्वी बहनों का तप-अभिनंदन कार्यक्रम रखा गया। सोनिया सिंगला धर्मपत्नी विजय जैन ने मासखमण तप किया। स्नेहलता जैन धर्मपत्नी कृष्ण जैन ने १० दिन, शिक्षा बंसल धर्मपत्नी सुरेश बंसल ने ८ दिन की तपस्या की।

तप-अभिनंदन कार्यक्रम में साध्वी विशदप्रज्ञा जी ने कहा कि जैन धर्म में मुक्ति के चार मार्ग बताए गए हैं—सम्यग् ज्ञान, सही श्रद्धा, चारित्र और तप। तप उसी मनुष्य के संचित कर्मों को नष्ट करता है। जो हिंसा, झूठ, चोरी, गुस्सा, अहंकार, लोभ को नियंत्रित कर चुका है। ऐसे व्यक्ति के द्वारा किया जाने वाला तप मनवांछित फल देने वाला होता है।

साध्वी प्रशमयशा जी ने संयोजकीय वक्तव्य में कहा कि जो तपता है, वह पकता है, तप इंद्रिय और मन को पकाने की प्रयोगशाला है। साध्वी मंदारप्रभा जी ने तप मार्ग को व्याख्यायित करते हुए मुक्ति के बाहरी और आंतरिक कारणों का विश्लेषण किया।

इस मासखमण तप पर साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभा जी का पावन संदेश प्राप्त हुआ, जिसका वाचन विनय जैन ने किया। तेरापंथ समाज द्वारा सोनिया सिंगला को तप अभिनंदन पत्र प्रदान किया। जिसका वाचन तेरापंथ सभा मंत्री विनोद जैन ने किया। समाज द्वारा सोनिया, स्नेहलता शिक्षा व अशोक को साहित्य आदि से सम्मानित किया गया। कन्या मंडल, तेरापंथी महिला मंडल द्वारा रोचक प्रस्तुतियाँ प्रस्तुत की।

इस अवसर पर तेरापंथ सभा प्रधान रामनिवास जैन, वीरभाण, अशोक, ज्ञानचंद, बबिता जैन ने प्रसन्नता व्यक्त करते हुए तप-अनुमोदना के हस्ताक्षर किए। पारिवारिक जनों में कृष्ण, विजय, रतनलाल, संदीप, साहिल, साक्षी, रमण, मोहनी, मुस्कान ने भाग्य की सराहना करते हुए विचार व्यक्त किए।

कार्यक्रम का मंगलाचरण नीतू जैन ने किया। राखी त्याग प्रतियोगिता, पर्युषण आराधना प्रतियोगिता में प्रथम, द्वितीय, तृतीय आने वालों को पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

तप अभिनंदन समारोह

पर्वत पाटिया।

डॉ० समणी ज्योतिप्रज्ञा जी, समणी मानसप्रज्ञा जी के प्रेरणा से श्रावक समाज में तपस्या निरंतर प्रवर्धमान है। तेरापंथ भवन में समणीद्वय के सान्निध्य में तप अभिनंदन समारोह का आयोजन सभा द्वारा किया गया। तपस्या के क्रम में ज्ञानचंद कोठारी एवं मीठालाल छत्रावत दोनों के श्रेणीतप की आराधना एवं बारडोली से समागत नवरतनमल गोखरू ने मासखमण ३१ दिनों की निराहार की तपस्या का प्रत्याख्यान कर स्वयं की कर्म निर्जरा के साथ धर्मसंघ का भी गौरव बढ़ाया है। तपस्वी का अभिनंदन सभा द्वारा किया गया। उपासक दिनेश राठौड़, महिला मंडल अध्यक्षा ललिता पारेख, सभा अध्यक्ष कमल पुगलिया, तेयुप अध्यक्ष चंद्रप्रकाश परमार, कांतिलाल सिंघवी ने भी अपनी मंगलकामना व्यक्त की।

श्रमणीवृंद ने तपस्या के महत्त्व पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम का संचालन समणी मानसप्रज्ञा जी ने किया।

मासखमण तप अभिनंदन

दक्षिण मुंबई।

शासनश्री साध्वी विद्यावती जी 'द्वितीय' के सान्निध्य में पर्युषण पर्व के विविध कार्यक्रम चले। इस अवसर पर अनिल लोढ़ा की सुपुत्री लब्धि लोढ़ा, उम्र १६ वर्ष ने मासखमण तप का प्रत्याख्यान किया। जनसमुह ने ॐ अर्हम की ध्वनि से तपस्वी बहन का अभिनंदन किया। और भी काई तपस्वी भाई-बहनों ने भी तप के प्रत्याख्यान किए। साध्वीश्री की प्रेरणा से महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाश्री जी के संदेश का वाचन किया। साध्वी मृदुयशा जी एवं साध्वी ऋद्धियशा जी के साथ मधुर संगीत प्रस्तुत किया।

दक्षिण मुंबई ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों ने सुंदर शब्द चित्र प्रस्तुत कर सबको भावविभोर कर दिया। सिरियारी संस्थान के निवर्तमान अध्यक्ष ख्यालीलाल तातेड़, अभातेयुप के पूर्व अध्यक्ष बी०सी० भलावत, महासभा मुंबई के आंचलिक प्रभारी दिनेश सुतरिया, मुंबई सभा के पूर्व अध्यक्ष भंवरलाल कर्णावट, मुंबई सभा अध्यक्ष नरेंद्र तातेड़, आचार्य महाप्रज्ञ विद्या निधि फाउंडेशन के अध्यक्ष किशनलाल डागलिया, तेरापंथी सभा के अध्यक्ष गणपतलाल डागलिया, अनिल लोढ़ा आदि ने अपने विचार रखे एवं तप की अनुमोदना की। सभी संस्था की ओर से तपस्वी का अभिनंदन किया।

हस्त निर्मित सामग्री एवं उपकरणों की प्रदर्शनी

राजलदेसर।

तेरापंथ भवन में साध्वीवृंद द्वारा साधु के दैनिक जीवन में उपयोग में आने वाली हस्त निर्मित सामग्री एवं उपकरणों की एक प्रदर्शनी लगाई गई। बड़ी संख्या में श्रावक-श्राविकाओं एवं ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों ने कला प्रदर्शनी का अवलोकन किया।

इस अवसर पर साध्वी डॉ० परमयशा जी ने बताया कि हस्त कला तेरापंथ शासन की अमूल्य देन है। शासनश्री साध्वी पानकुमारी जी 'प्रथम' श्रीडूंगरगढ़, शासनश्री साध्वी राजकुमारी जी 'गोगुंदा' कलाकार साध्वियाँ थीं। उनके नेतृत्व में यह कलाकृतियाँ हमें प्राप्त हुई हैं। हमारा सौभाग्य है कि हम भी गुरुदेव की कृपा से कला के क्षेत्र में आगे बढ़े। डॉ० साध्वी परमयशा जी, साध्वी धर्मयशा जी, साध्वी विनम्रयशा जी, साध्वी मुक्ताप्रभा जी एवं साध्वी कुमुदप्रभा जी ने कलाकृतियों का अवलोकन करवाया एवं उनके बारे में बताया। सभी जनों ने प्रदर्शनी को सराहा एवं पूरे मनोयोग से प्रत्येक वस्तु का निरीक्षण किया।

पर्युषण पर्व महोत्सव

चुरू।

साध्वी मंगलप्रभा जी के सान्निध्य में तेरापंथ भवन में पर्युषण महापर्व का आगाज हुआ। पर्व का अर्थ है—आनंद का अवतरण, पर्व का अर्थ है संस्कृति की साक्षात अवगति, पर्व का अर्थ है स्नेह एवं सौहार्द की दिशा में प्रस्थान करना। साध्वी प्रणवप्रभा जी ने उत्तराध्ययन सूत्र के आधार पर पर्युषण महापर्व की शुरुआत की। कन्या मंडल ने महावीर अष्टकम से मंगलाचरण किया। अन्नू बांठिया ने गीतिका प्रस्तुत की। कार्यक्रम का संचालन साध्वी समप्रभा जी ने पर्युषण में करणीय कार्यों की जानकारी देते हुए खाद्य संयम के बारे में बताया।

स्वाध्याय दिवस पर साध्वी मंगलप्रभा जी ने अपने उद्गार व्यक्त किए। साध्वी प्रणवप्रभा जी ने कहा कि मनुष्य जीवन दुर्लभ है। मनुष्य जीवन का सम्यक् लाभ कैसे उठाएँ। विषय पर अपना वक्तव्य दिया। साथ ही स्वाध्याय से क्या लाभ प्राप्त होते हैं, इस बारे में बताया। साध्वी समप्रभा जी ने संचालन करते हुए सभी को तपस्या के लिए प्रेरित किया।

सामायिक दिवस साध्वी मंगलप्रभा जी ने अभिनव सामायिक का प्रयोग करवाया।

वाणी संयम दिवस साध्वीश्री जी ने भगवान महावीर के तीसरे भव का वर्णन किया। साध्वी मंगलप्रभा जी ने सुखी जीवन का राज वाणी-संयम पर अपने उद्गार व्यक्त किए।

साध्वी समप्रभा जी ने कहानी के माध्यम से समझाया कि वाणी से बोया भी जा सकता है और खोया भी जा सकता है। साध्वी समप्रभा जी एवं साध्वी प्रणवप्रभा जी ने गीतिका प्रस्तुत की। इस अवसर पर नन्हीं बालिका तेजस्विनी द्वारा गीतिका की प्रस्तुति दी गई। कार्यक्रम का संचालन साध्वी समप्रभा जी ने किया।

अणुव्रत दिवस पर साध्वीवृंद ने अणुवत के महत्त्व पर प्रकाश डाला। इस अवसर पर साध्वीवृंद ने अणुवत पर गीतिका की प्रस्तुति दी।

जप दिवस पर साध्वीश्री ने अपना उद्बोधन दिया। साध्वी समप्रभा जी ने जप दिवस के उपलक्ष्य में जप कैसे व क्यों करना चाहिए तथा उसके फल के बारे में संक्षेप में बताया। साध्वी प्रणवप्रभा जी ने उत्तराध्ययन सूत्र के आधार पर बताया कि मनुष्य जीवन दुर्लभ है। कुमकुम जैन एवं रचना कोठारी द्वारा मंगलाचरण किया गया। कन्या मंडल की बहनों द्वारा गीतिका की प्रस्तुति दी गई। समण संस्कृति संकाय द्वारा मुन्नी कोठारी को आगम सहयोगी के रूप में मनोनीत किया गया। इस अवसर पर तेरापंथी सभा, महिला मंडल एवं कन्या मंडल सहित श्रावक समाज की अच्छी उपस्थिति रही। कार्यक्रम का संचालन साध्वी समप्रभा जी ने किया।

ध्यान दिवस इस अवसर पर साध्वीश्री जी ने उद्बोधन दिया। साध्वी प्रणवप्रभा जी ने ध्यान दिवस की उपयोगिता का वर्णन किया। कार्यक्रम का संचालन साध्वी समप्रभा जी ने किया।

संवत्सरी महापर्व पर साध्वी मंगलप्रभा जी ने कहा कि संवत्सरी महापर्व आत्मशुद्धि का पर्व है, इसलिए इसे महापर्व की उपमा दी गई है। उन्होंने संवत्सरी पर्व क्या, क्यों, कब और कैसे विषय पर आगम के आधार पर चर्चा की। साध्वीश्री जी ने कहा कि संवत्सरी आत्मशुद्धि का पर्व है।

इस अवसर पर तेरापंथी सभा, महिला मंडल, तेयुप, कन्या मंडल सहित श्रावक समाज की अच्छी उपस्थिति रही। महिला मंडल अध्यक्ष मुन्नी कोठारी ने आभार व्यक्त किया। सभा के मंत्री भरत कोठारी ने आगामी कार्यक्रमों की जानकारी दी। कार्यक्रम का संचालन साध्वी समप्रभा जी ने किया।

योग प्रशिक्षण सत्र

जयपुर।

शासनश्री साध्वी यशोमती जी के सान्निध्य में निःशुल्क योग प्रशिक्षण सत्र अणुविभा केंद्र, मालवीय नगर में योग प्रशिक्षिका रीना गोयल के द्वारा अणुव्रत समिति के अध्यक्ष विमल गोलछा की अध्यक्षता में आयोजित किया गया। जिसमें लगभग २६ सदस्यों (अणुव्रत समिति, जयपुर जैन विश्व भारती, लाडनूं) को योग, प्रेक्षाध्यान तथा कायोत्सर्ग के विभिन्न प्रयोग करवाए गए।

विमल गोलछा ने कहा कि योग दिवस के पश्चात यह प्रथम योग सत्र है। उमेंद्र गोयल ने कार्यक्रम का संयोजन किया। मंत्री डॉ० जयश्री सिद्धा ने सर्वप्रथम साध्वी रचनाश्री जी का उमेंद्र गोयल तथा सभी पधारे हुए महानुभावों का धन्यवाद एवं आभार ज्ञापन किया।

निःशुल्क एक्यूपंक्चर शिविर का आयोजन

जोधपुर।

तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम, जोधपुर द्वारा ओसवाल कम्यूनिटी सेंटर में एक्यूपंक्चर विधि से चिकित्सा शिविर का आयोजन किया गया।

इस शिविर में तेरापंथ महिला मंडल, जोधपुर द्वारा संचालित आचार्य महाश्रमण फिजियोथैरेपी सेंटर के डॉ० संदीप धनकड़ और विजय सिंह ने लोगों का एक्यूपंक्चर विधि से रोगों का इलाज किया। शिविर में ३५ से अधिक लोगों ने इस नई तकनीक का लाभ लिया, जिसमें कमरदर्द, सर्वाइकल, घुटनों का दर्द, आँख में सूजन, पैरों में सूजन आदि बीमारियों का इलाज किया।

इस अवसर पर तेरापंथ सभा अध्यक्ष माणकचंद तातेड़, महासभा सदस्य विजयराज मेहता, सभा मंत्री महावीर चोपड़ा, तेयुप से रतन चोपड़ा, नरेश तातेड़, राकेश मरड़िया, कैलाश तातेड़ उपस्थित रहे।

टीपीएफ से गुलाबचंद भंडारी, गणपत मेहता, प्रियंका बैद, भारती बैद, सुधा भंसाली, एन०सी० तातेड़, नितिन तातेड़ ने अपनी सेवाएँ दी। आभार ज्ञापन टीपीएफ मंत्री पवन बोथरा ने किया। कार्यक्रम में सेवाएँ देने वाले दोनों चिकित्सकों को टीपीएफ द्वारा सम्मानित किया गया।

कर्तव्य बोध कार्यशाला का आयोजन

बल्लारी।

उपासक प्रकाश सिंघवी एवं उपासक सुरेंद्र बोथरा के नेतृत्व में तेयुप, बल्लारी ने कर्तव्य बोध कार्यशाला का आयोजन किया। इस कार्यक्रम में तेयुप के सदस्यों के साथ-साथ तेरापंथ सभा एवं तेरापंथ महिला मंडल के सदस्य भी उपस्थित थे। कार्यक्रम की शुरुआत करते हुए सहयोगी उपासक सुरेंद्र बोथरा ने सेवा, संस्कार, संगठन एवं समर्पण के बारे में समझाया। उसके पश्चात मुख्य प्रवक्ता प्रकाश सिंघवी ने तेरापंथ के इतिहास के कुछ रोचक घटनाओं का उदाहरण देते हुए तेयुप के तीनों मुख्य आयाम—सेवा, संस्कार, संगठन के बारे में सभी सदस्यों को समझाया।

बल्लारी के रहने वाले उपासिका सरोज छाजेड़ ने सोशल मीडिया में फैल रहे गलत मैसेज का किस प्रकार सही जवाब दिया जा सके, इसके बारे में सबको बताया। इसी कड़ी में महिला मंडल अध्यक्ष प्रवीणा लुणावत एवं तेयुप कोषाध्यक्ष पंकज छाजेड़ ने भी अपने-अपने विचार व्यक्त किए। अंत में मंगलपाठ के साथ कार्यक्रम संपन्न हुआ।

विकास महोत्सव के विविध आयोजन

एक कीर्तिमान पुरुष थे आचार्यश्री तुलसी

राजलदेसर।

तेरापंथ भवन में डॉ० साध्वी परमयशा जी के सान्निध्य में आचार्यश्री तुलसी पदाभिषक दिवस 'विकास महोत्सव' का कार्यक्रम मनाया गया। डॉ० साध्वी परमयशा जी ने कहा कि आचार्यश्री तुलसी एक विकास पुरुष थे। उनके शासनकाल में धर्मसंघ ने अभूतपूर्व विकास किया। उन्होंने तेरापंथ शासन को प्रगति के नित नए नवोन्मेष दिए। महामना का जीवन आचार्यों की वर्णमाला था। वे एक कीर्तिमान पुरुष थे। आचार्य तुलसी ने आज ही के दिन महाश्रमण एवं महाश्रमणी पद का सृजन किया।

कार्यक्रम में तेरापंथ महिला मंडल ने अपनी स्वर लहरियों के साथ विकास महोत्सव का मंगलाचरण किया। साध्वी धर्मयशा जी, साध्वी विनम्रयशा जी, साध्वी मुक्ताप्रभा जी ने भी अपने भावों की गभिव्यक्ति गीतिका, कविता के माध्यम से दी। दूसरे चरण में महिला मंडल की मंत्री सविता बच्छावत, हेमलता घोषल, उपासक राजेश चिंडालिया, वरिष्ठ श्रावक पन्नालाल दुगड़ ने अणुव्रत अनुशास्ता आचार्यश्री तुलसी के प्रति अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम का संचालन साध्वी कुमुदप्रभा जी ने किया।

आचार्य तुलसी विकास के पर्याय थे

विल्लुपुरम्।

साध्वी उज्ज्वलप्रभा जी के सान्निध्य में विकास महोत्सव हर्षोल्लास से मनाया गया। कन्या मंडल की बालिकाओं के मंगलाचरण से कार्यक्रम की शुरुआत हुई। साध्वी उज्ज्वलप्रभा जी ने कहा कि व्यक्ति लक्ष्य को पाने के लिए जितना विनम्र रहता है, कर्मशीलता के साथ आगे बढ़ता है, तो समर्पण की मशाल से जीवन को प्रकाशित कर लेता है, निश्चित ही वह विकास के सृजन के नव स्वस्तिक रचता है। आचार्य तुलसी विकास पुरुष थे, जिन्होंने धर्मसंघ में विकास के नए क्षितिज उद्घाटित किए।

साध्वी अनुप्रेक्षाश्री जी ने कहा कि शुद्ध नीति-रीति के आधार पर ही धर्मसंघ ने ऊँचाईयाँ प्राप्त की। साध्वी प्रबोधयशा जी ने सुमधुर गीत का संगान किया। साध्वी सन्मतिप्रभा जी ने कहा कि आचार्य तुलसी कोमलता के पर्याय थे। सभा के अध्यक्ष जवरीलाल सुराणा, सभा मंत्री राजेश सुराणा ने अपने विचारों की अभिव्यक्ति दी। रेखा आंचलिया ने आचार्य तुलसी के तेरापंथ धर्मसंघ के प्रति अनंत उपकारों पर अपने भावों की अभिव्यक्ति दी। महिला मंडल की बहनों ने गीतिका की प्रस्तुति दी। कार्यक्रम के अंत में संघगान गाया गया। संचालन तेयुप मंत्री विशाल सुराणा ने किया।

विकास के श्लाका पुरुष थे - आचार्य श्री तुलसी

रायपुर।

तेरापंथ भवन में २८वें विकास महोत्सव का आयोजन मुनि दीप कुमार जी के सान्निध्य में तेरापंथी सभा द्वारा किया गया। मुनि दीप कुमार जी ने कहा कि विकास के श्लाका पुरुष थे आचार्यश्री तुलसी। विकास महोत्सव आचार्यश्री तुलसी के आचार्य पदारोहण दिवस के उपलक्ष्य में मनाया जाता है। आचार्य श्री तुलसी विकास के सूत्रधार थे। आचार्यश्री तुलसी के युग में बहुआयामी विकास हुआ। उन्होंने विकास की नई लकीरें खींची।

बाल मुनि काव्य कुमार जी ने कहा कि आचार्य श्री तुलसी ज्ञान के हिमालय थे। उनके शासनकाल में विकास के नए आयाम उद्घाटित हुए। कार्यक्रम में मंगलाचरण महिला मंडल की बहनों ने किया। तेरापंथी सभा अध्यक्ष सुरेंद्र चोरड़िया, तेयुप अध्यक्ष वीरेंद्र डागा आदि ने विचार रखे। संचालन सभा मंत्री सूर्यप्रकाश बैद ने किया।

क्रांतिकारी आचार्य थे आचार्यश्री तुलसी

गदग।

शासनश्री साध्वी पद्मावती जी के सान्निध्य में तेरापंथ भवन में विकास महोत्सव का कार्यक्रम मनाया गया। शासनश्री साध्वी पद्मावती जी ने कहा कि आचार्यश्री तुलसी उस व्यक्ति का नाम है जिसकी ख्याति राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय दोनों क्षेत्रों में व्याप्त हो चुकी है। इसका कारण है आपने धर्म को नई पहचान दी।

साध्वी डॉ० गवेषणा श्री जी ने संचालन करते हुए कहा कि आचार्यश्री तुलसी एक क्रांतिकारी आचार्य थे, उन्होंने तेरापंथ धर्मसंघ की छवि को सात समुद्रों के पार पहुँचाया है। आचार्यश्री तुलसी का अवतरण विकास का अवतरण है। साध्वी मयंकप्रभा जी ने कहा कि तेरापंथ संघ विकासशील धर्मसंघ है। साध्वी दक्षप्रभा जी व साध्वी मेरुप्रभा जी ने सुमधुर गीतिका प्रस्तुत की। कर्नाटक अणुव्रत समिति के प्रभारी हुबली से समागत केसरी चंद गोलछा, सभा अध्यक्ष अमृतलाल कोठारी, महिला मंडल की मंत्री विजेता भंसाली ने प्रस्तुति दी। आभार ज्ञापन कमलेश जीरावला ने किया।

अणुव्रत दर्शन क्विज प्रतियोगिता का आयोजन

नालासोपारा (मुंबई)।

अणुव्रत द्वारा आयोजित अणुव्रत गॉट टेलेंट के अणुव्रत दर्शन क्विज आयोजित हुई। उपासिकाओं बहनों द्वारा महामंत्रोच्चार से कार्यक्रम की शुरुआत हुई। कन्या मंडल द्वारा अणुव्रत गीत का संगान किया गया। क्षेत्रीय संयोजक पारस बाफना ने सभी का स्वागत एव अभिनंदन किया। जज की भूमिका में अंकित डांगी ने क्विज की पूरी जानकारी एवं प्रतियोगिताओं की जिज्ञासाओं का समाधान दिया। व क्विज संचालन किया।

अणुव्रत दर्शन क्विज में विरार में सह-संयोजक मनोज हिंगड़ ने निर्णायक की भूमिका निभाई। प्रथम स्थान कन्या मंडल से टीम दर्शन में दिव्या मेहता, शिखा चोपड़ा, हीन चोपड़ा, कली चोहान रहे। द्वितीय स्थान किशोर मंडल से टीम चारित्र ऋषभ धाकड़, अवि धाकड़, ऋषभ सोलंकी, विदित ढालावत रहे। तृतीय स्थान ज्ञान से ओमप्रकाश बाफना, लक्ष्मीलाल मेहता, चंद्रप्रकाश धाकड़, अनिल परमार रहे। महिला मंडल से टीम तप में नीता कोठारी, संगीता ढालावत, ज्योति हिरण, चंचल चोहान रहे। अणुव्रत समिति, मुंबई द्वारा सभी विजेताओं सहित सभी प्रतियोगियों को पुरस्कृत किया गया।

इस अवसर पर ज्ञानशाला के नन्हे-मुन्ने बच्चों द्वारा अणुव्रत चेतना दिवस के अवसर पर नाटक द्वारा रोचक प्रस्तुति दी। कार्यक्रम में उपासिका प्रेमा धाकड़, लक्ष्मी मेहता एवं सभा संरक्षक मिश्रीमल चोरड़िया, तेयुप से अध्यक्ष किशन कोठारी, मंत्री दिनेश धाकड़, अणुव्रत समिति, मुंबई कार्यकारिणी सदस्य विकास धाकड़, रमेश ढालावत व मोहन कुमठ की विशेष रूप से उपस्थिति रही। तेरापंथ सभा, महिला मंडल, ज्ञानशाला परिवार, तेयुप, किशोर मंडल, कन्या मंडल एवं संपूर्ण तेरापंथ समाज आदि की उपस्थिति रही। कार्यक्रम का संचालन एवं आभार ज्ञापन संयोजक पारस बाफना ने किया।

प्रेक्षाध्यान शिविर का आयोजन

पर्वत पाटिया।

समणी निर्देशिका डॉ० समणी ज्योतिप्रज्ञा जी, समणी मानसप्रज्ञा जी की प्रेरणा एवं सान्निध्य में तेरापंथी सभा द्वारा एक दिवसीय प्रेक्षाध्यान शिविर का आयोजन किया गया। शिविर में प्रतिभागियों को आसन, प्राणायाम स्थानीय प्रेक्षा प्रशिक्षिक प्रवीण ओस्तवाल ने करवाए। वरिष्ठ प्रेक्षा प्रशिक्षक गौतम गादिया ने प्रेक्षाध्यान के बारे में विस्तार से जानकारी प्रदान की। समणी डॉ० ज्योतिप्रज्ञा जी ने कहा कि नियमित प्रेक्षाध्यान से व्यक्ति आधि, व्याधि, उपाधि से बच सकता है।

प्रेक्षा प्रशिक्षिका रेणु नाहटा ने समय प्रबंधन, निलपा पारेख ने मुद्रा विज्ञान एवं मंत्र साधना, रेणु बैद ने अवचेतन मन से संपर्क विषय पर अपनी प्रस्तुति दी। श्वेता रामपुरिया ने श्वास प्रेक्षा के प्रयोग करवाए। शिविर में भाग ले रहे वरुण तिवारी ने अपने अनुभव बताए एवं नियमित अभ्यास करने का संकल्प लिया।

कार्यक्रम के संयोजक के रूप में कांतिलाल बढ़ेरा ने अपना श्रम किया। व्यवस्था हेतु सभा मंत्री भगवती परमार, सहमंत्री अनिल चौधरी, प्रदीप पुगलिया, तेयुप से उपाध्यक्ष प्रदीप पुगलिया एवं पंकज बुच्चा ने अपने श्रम का नियोजन किया। ज्ञानचंद कोठारी शिविर के प्रायोजक रहे। लगभग ३५ शिविरार्थियों ने भाग लिया। प्रशिक्षण देने पधारे सभी प्रेक्षा प्रशिक्षकों का सभा द्वारा सम्मान किया गया। आभार ज्ञापन सभा अध्यक्ष कमल पुगलिया ने किया।

मंगलभावना समारोह का आयोजन

साउथ हावड़ा।

तेरापंथी सभा के तत्त्वावधान में मुमुक्षु प्रेक्षा संचेती का मंगलभावना कार्यक्रम आयोजित हुआ। कार्यक्रम का प्रारंभ नमस्कार महामंत्र के सामुहिक संगान के साथ हुआ। साउथ हावड़ा तेरापंथ महिला मंडल की टीम ने मंगलाचरण किया। सभा के मंत्री बसंत पटावरी ने मुमुक्षु बहन के परिवार की संक्षिप्त जानकारी देते हुए अपनी भावनाएँ रखी। महिला मंडल की मंत्री रेखा बैंगाणी ने मुमुक्षु बहन की अनुमोदना की।

तेयुप अध्यक्ष बीरेंद्र बोहरा, टीपीएफ साउथ हावड़ा के अध्यक्ष बीरेंद्र सेठिया, अणुविभा के कार्यसमिति सदस्य पंकज दुधोड़िया ने भी अपनी भावनाएँ रखी। तेयुप की टीम ने गीतिका के माध्यम से संयम यात्रा की अनुमोदना की। मुमुक्षु प्रेक्षा संचेती के भाई जयंत एवं माताश्री ममता ने अपने भाव रखे।

मुमुक्षु प्रेक्षा संचेती ने अपने वैराग्य एवं अपने संयम यात्रा की संक्षिप्त जानकारी रखी। मंगलभावना के इस कार्यक्रम में सभा के मुख्य न्यासी संजय नाहटा, उपाध्यक्ष ओमप्रकाश बांठिया, सुशील बाफना, महिला मंडल, तेयुप, टीपीएफ, अणुव्रत समिति के पदाधिकारी एवं श्रावक समाज की गरिमामयी उपस्थिति रही। कार्यक्रम का समापन मुमुक्षु द्वारा मंगलपाठ के साथ हुआ। कार्यक्रम का संचालन एवं आभार ज्ञापन सभा के सहमंत्री मनोज कोचर ने किया।

ज्ञानशाला दिवस एवं संपर्क पखवाड़ा

टिटलागढ़।

ज्ञानशाला दिवस एवं संपर्क पखवाड़ा उत्साह के साथ मनाया गया। स्नेहा जैन के मंगलाचरण से कार्यक्रम का प्रारंभ हुआ। बच्चों ने सांकेतिक रैली भवन में ही निकाली। ज्ञानशाला संयोजिका कृष्णा जैन ने सभी का स्वागत किया। बच्चों ने ज्ञानशाला गीत का संगान किया। तत्पश्चात सभा अध्यक्ष सुरेंद्र जैन तथा प्रांतीय कार्यकारिणी सदस्य गोविंद जैन ने अपने विचार रखे।

तेयुप के अध्यक्ष भीमसेन जैन भी उपस्थित थे। सुभद्रा जैन ने सुमधुर गीत का संगान किया। २०१९ एवं २०२० में ज्ञानार्थी परीक्षा में प्रथम, द्वितीय, तृतीय आने वाले ज्ञानार्थियों को मोमेंटो देकर सम्मानित किया गया तथा लॉक डाउन के समय के विभिन्न प्रतियोगिता के पुरस्कार बच्चों को दिए गए।

श्रेष्ठ ज्ञानार्थी, श्रेष्ठ माँ, श्रेष्ठ प्रशिक्षक, श्रेष्ठ कोर कमेटी सदस्य सभी को मोमेंटो देकर सम्मानित किया गया। बच्चों ने फैंसी ड्रेस प्रतियोगिता के अंतर्गत सुंदर प्रस्तुतियाँ दी। कार्यक्रम का संचालन खुशबू जैन ने किया।

शपथ ग्रहण समारोह

तारानगर।

शासनश्री साध्वी प्रसमरति जी के सान्निध्य में संस्कारक मनीष बरमेचा ने शपथ के सभी नियमों का विधिपूर्वक करते हुए मंत्रोच्चार के साथ जैन संस्कार विधि से कार्यक्रम संपादित करवाया। तेयुप संस्कारक टीम की तरफ से नवमनोनीत अध्यक्ष मनीष बोथरा, नव मनोनीत मंत्री हितेश सुराणा व उनकी टीम को मंगलभावना पत्रक भेंट किया गया।

तेरापंथ सभा के अध्यक्ष राजेंद्र बोथरा एवं मंत्री मांगीलाल बरमेचा ने मंगलभावना यंत्र की विधिवत रूप से स्थापना की तथा सभी को शपथ दिलाई और जैन संस्कार विधि की प्रशंसा की। तेयुप के नवमनोनीत मंत्री हितेश सुराणा ने पधारे हुए सभी पदाधिकारियों व संस्कारकों के प्रति तेयुप द्वारा आभार ज्ञापित किया।

कार्यक्रम में तेरापंथी सभा के अध्यक्ष राजेंद्र बोथरा, मंत्री मांगीलाल बरमेचा, तेरापंथ महिला मंडल की अध्यक्षा सरोज देवी बरमेचा, तेयुप के निवर्तमान मंत्री विनोद बोथरा, तेरापंथी सभा पश्चिम विहार (दिल्ली) के मंत्री मनीष बरमेचा आदि की गरिमामय उपस्थिति रही।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
27 सितंबर-3 अक्टूबर, 2021

✦ *एकांत स्थान में साधना करने का मूल्य है, पर भीड़ में रहकर भी एकांत का-सा अनुभव करना परम मूल्यवान है।*

—आचार्यश्री महाश्रमण

तेयुप के विविध कार्यक्रमों के आयोजन

तेरापंथ लोगों प्रदर्शनी प्रतियोगिता

सरदारपुरा।

तेयुप द्वारा साध्वी पुण्यप्रभा जी के सान्निध्य में तेरापंथ भवन, अमरनगर में 'तेरापंथ लोगो प्रदर्शनी व प्रतियोगिता' का आयोजन किया, जिसमें ८५ प्रतिभागियों ने तेरापंथ धर्मसंघ के लोगो को साज्य वस्तुओं द्वारा बनाया।

सभी प्रतिभागियों ने अपने-अपने हस्तनिर्मित लोगो के प्रदर्शनी की स्टॉल लगाई। सर्वश्रेष्ठ तीन कलाकारों को तेयुप अध्यक्ष महावीर चौधरी, तेममं अध्यक्षा सरिता कांकरिया व बी०आर० जैन की टीम ने संयुक्त निर्णय से विजेता घोषित किया।

कार्यक्रम संयोजक विकास चौपड़ा व देवराज चौपड़ा ने बताया कि प्रतियोगिता में प्रथम स्थान नेता मेहता बैद, द्वितीय स्थान तनवी जैन व तृतीय स्थान रिया चोपड़ा ने प्राप्त किया।

बारह व्रत दीक्षा कार्यशाला

जयपुर।

अभातेयुप के निर्देशन में तेयुप द्वारा महावीर साधना केंद्र, जवाहरनगर में मुनि सुमति कुमार जी एवं मुनि जयकुमार जी के सान्निध्य में बारह व्रत दीक्षा कार्यशाला का आयोजन किया गया।

मुनिश्री ने बारह व्रतों की विवेचना करते हुए बताया कि श्रावक को सम्यक्त्व का ज्ञान होना चाहिए। क्योंकि सम्यक्त्व का ज्ञान होने के बाद ही व्यक्ति अपने स्वविवेक से छोटे-छोटे व्रतों का पालन करने की ओर अग्रसर होता है। व्यक्ति के द्वारा अपनी इच्छाओं को संयमित करना, श्रमण संस्कृति का मूलभूत अंग है। आज श्रावक समाज के जीवन में मर्यादा व अनुशासन कम होता जा रहा है। भौतिक सुख-सुविधाएँ बढ़ने के बावजूद हम अंदर से दुःखी रहते हैं।

परिषद के अध्यक्ष राजेश छाजेड़ ने बताया कि यदि हम चाहते हैं कि हमारे जीवन में संतुलन आए तो हमें छोटे-छोटे व्रतों को लेने का संकल्प करना चाहिए। छोटे-छोटे व्रत स्वीकार कर संयम की धारण से अपने जीवन को व्यवस्थित व गरिमामय बना सकते हैं।

जयपुर विराजित चारित्रात्माओं के सान्निध्य में तेयुप के सदस्यों सहित ५४ श्रावक-श्राविकाओं ने बारह व्रत के नियमों का पालन करने का संकल्प लिया। कार्यक्रम की संयोजना में गौतम बरड़िया सहित सभी कार्यकर्ताओं की भूमिका उल्लेखनीय रही।

रक्तदान शिविर

सूरत।

विश्व मैत्री दिवस के अवसर पर अभातेयुप के निर्देशन में तेयुप, सूरत एवं उधना (संयुक्त) द्वारा गोकुलधाम सोसायटी, डिंडोली में नमस्कार महामंत्र के सामुहिक मंत्रोच्चार से रक्तदान शिविर का शुभारंभ किया गया। इस रक्तदान शिविर की विशेषता रही कि इस सोसायटी में पहली बार रक्तदान शिविर के लिए काफी लोगों को प्रोत्साहित, जागरूक किया गया। गोकुलधाम सोसायटी के सहयोग से कुल ५७ यूनिट ब्लड डोनेशन हुआ। सोसायटी के प्रमुख बाबूकाका कनोडिया एवं रामदेव भाई प्रजापति का संपूर्ण सहयोग रहा।

एमबीडीडी गुजरात प्रभारी मुकेश राठौड़ एवं तेयुप, सूरत के मंत्री अभिनंदन गादिया, सहमंत्री विजय सुराणा एवं एमबीडीडी प्रभारी सतीश संकलेचा, तेजु माडोत, श्रेयांस सिरोहिया एवं कार्यकारिणी सदस्य महेंद्र बुरड तथा तेयुप उधना से अध्यक्ष मनीष दक, मंत्री गौतम आंचलिया आदि अनेक सदस्यगण उपस्थित रहे।

सेवियर ब्लड बैंक का सेवा हेतु साहित्य द्वारा सम्मान किया गया। तेयुप, सूरत अध्यक्ष गौतम बाफना द्वारा बाबूकाका, सेवियर ब्लड बैंक का फोन द्वारा आभार व्यक्त किया गया।

सेवा कार्य

बैंगलुरु।

तेयुप द्वारा नंदिनी लेआउट स्थित आचार्यश्री महाप्रज्ञ हाई स्कूल को ११ वाइट बोर्ड सेट तेयुप द्वारा भेंट किए गए।

आचार्य महाप्रज्ञ हाई स्कूल शासक पार्वती विश्वनाथन ने सभी का स्वागत करते हुए जानकारी दी। पिछले अठारह सालों से विद्यालय द्वारा जीवन-विज्ञान बच्चों को सिखाया जा रहा है। तेयुप के अध्यक्ष विनय बैद ने जीवन में व्यक्ति की उन्नति के लिए अध्यापक की भूमिका पर अपने विचार व्यक्त किए। स्कूल के संस्थापक मनोहर भारती ने अपने विचार रखते हुए तेयुप के कार्यों की सराहना की। स्कूल के सभी अध्यापक व आध्यापिकाओं का सम्मान विद्यालय अध्यक्षा रत्ना एमबी ने किया। सभी का आभार अध्यापिका मालती मैडम ने माना व अध्यापिका पुनर्वासी ने संचालन किया।

तेयुप के अध्यक्ष विनय बैद की अध्यक्षता में स्कूल को ११ व्हाइट बोर्ड सेट भेंट किए गए। कोषाध्यक्ष सुरेश संचेती ने अपने भाव व्यक्त किए। तेयुप परिवार से विद्यालय का व सभी सदस्यों का आभार मंत्री प्रवीण बोहरा ने किया। उपाध्यक्ष रणजीत राखेचा, भेरूलाल पोखरना, रजत बैद व सुधीर पोखरना का विशेष सहयोग रहा।

सेवा कार्य

पूर्वांचल।

संवत्सरी महापर्व के अवसर पर तेयुप, पूर्वांचल-कोलकाता द्वारा सॉल्ट लेक चातुर्मासिक स्थल गुप्ता भवन में सभी पूरे श्रावक समाज के लिए उकाली पाउच का वितरण किया गया। लगभग ५०० उकाली पाउच का वितरण किया गया। इस सेवा में विशेष श्रम रहा कार्यसमिति सदस्य राजीव बोथरा एवं नीरज बैंगानी का रहा। इस सेवा में विशेष सहयोग रहा सॉल्ट लेक सभा का। विशेष साधुवाद चेतना स्टोर का जिन्होंने तपस्वी भाई-बहनों के लिए तप के पारणा के लिए स्वादिष्ट उकाली पाउच बनाए।

अध्यात्म की साधना से अनाबाध सुख...

(पृष्ठ १२ का शेष)

पूज्यप्रवर की सन्निधि में जैन योग संदर्भ कोष ग्रंथ का लोकार्पण, जो जैन विश्व भारती से प्रकाशित है एवं निर्देशन दामोदर शास्त्री, प्रधान संपादक समणी भाष्कर प्रज्ञा है, समर्पित किया गया। पूज्यप्रवर ने फरमाया यह जैन योग संदर्भ कोष साधारण ग्रंथ नहीं लग रहा है। थोड़ा विशिष्ट कोटि का महत्त्वपूर्ण ग्रंथ प्रतीत हो रहा है। जैन योग के बारे में इसमें सामग्री प्राप्त हो रही है। अच्छा पठनीय ग्रंथ प्रतीत हो रहा है।

मुख्य नियोजिका जी ने कहा कि अज्ञानी व्यक्ति के पास अंधकार ही अंधकार रहता है। उसमें हेय, गेय, उपादेय की चेतना नहीं रहती है। स्वाध्याय एक तप है। तप के साथ ज्ञान का भी विकास होता है।

दिल्ली विधानसभा के स्पीकर रामनिवास गोयल पूज्यप्रवर की सन्निधि में दर्शनार्थ पधारे। उन्होंने अपनी भावना अभिव्यक्त की।

पूज्यप्रवर ने फरमाया कि गुरुदेव तुलसी ने अणुव्रत की बात को आगे बढ़ाया था। एक राष्ट्र के लिए भौतिक विकास की भी अपेक्षा होती है, साथ में आर्थिक विकास भी चाहिए। इन दो के अलावा तीसरा विकास है, नैतिकता का विकास वह भी राष्ट्र के लिए आवश्यक है। राष्ट्र में आध्यात्मिकता का विकास भी हो। शिक्षा का विकास भी आवश्यक हे। ये सारे विकास होते हैं, तो राष्ट्र अच्छा विकास कर सकता है।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

भौतिक और आर्थिक विकास के साथ नैतिक...

(पृष्ठ १२ का शेष)

वि०सं० २०८२, सन् २०२५ में लगने वाला है। और सन् २०२६, वि०सं० २०८३ में ३०० वर्ष पूरे होने वाले हैं। तो पूरे वर्ष स्वामी जी का ३००वाँ जन्म दिवस ज्ञान, स्वाध्याय एवं त्याग-तपस्या से मनाएँ।

आज द्वादशी भी साथ में जुड़ी हुई है। हमारे धर्मसंघ के सप्तम आचार्य परम पूज्य आचार्यश्री डालगणी का भी आज महाप्रयाण दिवस है। दो आचार्यों का महाप्रयाण दिवस एक ही दिन आ जाना इतिहास की मानो विरल घटना है। आज ही के दिन परम पूज्य डालगणी ने लाडनूं में अंतिम श्वास लिया था। हमारे धर्मसंघ के एक तेजस्वी आचार्य के रूप में डालगणी की ख्यात है। उन्होंने लगभग १२ वर्ष तक धर्मसंघ की सेवा की थी।

वे एक ऐसे आचार्य थे जो पूर्वाचार्य द्वारा नियुक्त नहीं थे, धर्मसंघ के द्वारा मनोनीत आचार्य हुए थे। वे विलक्षण कोटि के विशेष आचार्य थे। उनके प्रति भी मैं श्रद्धार्पण बार-बार करता हूँ। साथ-साथ आचार्य महाप्रज्ञ को भी वंदन करता हूँ। उन्होंने भी भाद्रव शुक्ला द्वादशी को मुझे गंगाशहर में आशीर्वाद प्रदान किया था, युवाचार्य पद पर प्रतिष्ठित किया था। उनकी कृपा आज के दिन उन्होंने अपना उत्तरीय मुझे अपने हाथों से ओढ़ाया था। मैं उनको भी श्रद्धार्पण करता हूँ। इस तरह आज का दिन विशेष हो गया है।

हम पूर्वाचार्यों का स्मरण करते हुए आगे बढ़ते रहें। मुनि केशि और मुनि अर्हम ने पूज्यप्रवर से अठाई का प्रत्याख्यान लिया। संघगान के साथ कार्यक्रम पूर्ण हुआ। पूज्यप्रवर ने तपस्या के प्रत्याख्यान करवाए।

लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला पूज्यप्रवर के श्रीचरणों में दर्शनार्थ पहुँचे। पूज्यप्रवर ने मंगल उद्बोधन प्रदान करते हुए फरमाया कि अभी लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला उपस्थित हैं। हमने अहिंसा यात्रा शुरू की थी, अब तो सातवाँ वर्ष भी संपन्नता के निकट है। अहिंसा यात्रा के तीनों उद्देश्यों के बारे में पूज्यप्रवर ने फरमाया। आचार्य तुलसी ने अणुव्रत की बात चलाई थी, जिससे आदमी अच्छा बन सके। लंबी यात्राएँ भी हुई थीं।

आचार्य महाप्रज्ञ जी ने भी अहिंसा यात्रा की थी। प्रेक्षाध्यान-योग के द्वारा उन्होंने अच्छा रास्ता दिखाने का प्रयास किया था। भारत के पास संपदा के रूप में कितने अच्छे ग्रंथ, संत और पंथ हैं। लोकतांत्रिक प्रणाली वाले विशाल देश के लोकसभा अध्यक्ष का पधारना एक महत्त्वपूर्ण बात है। भारत में भौतिक, आर्थिक विकास के साथ नैतिकता की शक्ति का विकास भी रहे। आध्यात्मिकता का विकास और शिक्षा का विकास रहे। स्वर्ग से भी ऊँची चीज आध्यात्मिकता होती है।

साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभा जी ने कहा कि पूज्यप्रवर लंबी यात्रा कर राजस्थान पधारे हैं। आप अपनी साधना के साथ लोककल्याण के कार्य में संलग्न हैं। लोकसभा अध्यक्ष का पूज्यप्रवर की सन्निधि में पधारना विशेष बात है। लोकसभा अध्यक्ष का यहाँ पधारना हमारे देश को एक नई दिशा दिखाएगा।

लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला ने कहा कि आपके भीलवाड़ा चातुर्मास ने पूरे राजस्थान को प्रकाशित किया है। तेरापंथ संप्रदाय समूचे देश के अंदर सामाजिक, आर्थिक और आध्यात्मिक परिवर्तन करने में इनका बहुत बड़ा योगदान है। आपदा के समय संपूर्ण समाज आपके निर्देश में सेवा और समर्पण का कार्य करता है।

व्यवस्था समिति अध्यक्ष प्रकाश सुतरिया ने ओम बिरला का स्वागत किया। कोटा सभा मंत्री धर्मचंद जैन ने पूज्यप्रवर से कोटा में ज्यादा से ज्यादा प्रवास करवाने की विनती की। बीजेपी जिला अध्यक्ष लादुलाल तेली ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। ओम बिरला के साथ सुभाष बहरिया व एस०पी० जोशी भी उपस्थित थे। व्यवस्था समिति द्वारा ओम बिरला एवं अन्य समागत विभिन्न संस्थाओं के प्रमुखों का सम्मान किया गया।

समणी कुसुमप्रज्ञा जी, समणी अमनप्रज्ञा जी, समणी प्रणवप्रज्ञा जी, मुनि राजकरण जी ने गीत के माध्यम से अपनी श्रद्धांजलि परमपूज्य भिक्षु के प्रति अर्पित की।

मुख्य नियोजिका जी ने कहा कि आचार्य भिक्षु का व्यक्तित्व बहुआयामी व्यक्तित्व था। वे एक महान साधक और रत्नत्रय के आराधक थे। वे एक महान दार्शनिक, महान तार्किक और महान चिंतक भी थे।

मुख्य मुनिप्रवर ने कहा कि आचार्य भिक्षु एक ऐसे महापुरुष थे, जिनका व्यक्तित्व बहुत विराट था। वे गृहस्थ राजा तो नहीं बने, किंतु मुनि बनकर के वे चारित्रात्माओं के सम्राट बने। त्यागियों के मुकुट मणी बने और तत्त्वज्ञान के विद्वान बने।

कार्यक्रम का संचालन करते हुए मुनि दिनेश कुमार जी ने कहा कि आज ही के दिन आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी ने मुनि महाश्रमण जी को भावी भिक्षु के पद पर स्थापित कर दिया था।

✦ *अतीत अनंत है, अनागत भी अनंत है, किंतु वर्तमान बहुत ही छोटा समय होता है। छोटा होने पर भी वर्तमान किसी दृष्टि से ज्यादा उपयोगी होता है।*

✦ *मनुष्य योनि को महत्त्वपूर्ण माना गया है, क्योंकि इसी जन्म से सिद्धत्व को प्राप्त किया जा सकता है। देवता भी मनुष्य गति में आए बिना मुक्ति को प्राप्त नहीं हो सकते।*

– आचार्यश्री महाश्रमण

साधु चारित्र में क्षति हो ऐसे उपघातों से बचने का प्रयास करें : आचार्यश्री महाश्रमण

भीलवाड़ा, १६ सितंबर, २०२१

जिन शासन के प्रहरी आचार्यश्री महाश्रमण जी ने मंगल देशणा प्रदान कराते हुए फरमाया कि ठाणं आगम में उपघात के दस प्रकार बताए गए हैं—उद्‌गम, उत्पाद एषणा ये भिक्षा संबंधी नियमों का अतिक्रमण या दोष है। उद्‌गम के दोष आधा कर्मी लोग होते हैं। धात्री आगद उत्पाद के हैं। एषणा के भी हैं। भिक्षा के संदर्भ में जो साधु असावधान रहता है, पूरी एषणा करता नहीं है, जल्दबाजी में ले लेता है, इतनी परवाह नहीं करता। उस साधु के एषणा समिति की असावधानी के कारण से चारित्र में उपघात हो सकता है, क्षति हो सकती है।

चौथा उपघात है—परिकर्म। साधु का ज्यादा ध्यान परिकर्म में रहे। परिकर्म में ज्यादा क्रिया होती है, तो वह भी साधुपन चारित्र में कुछ क्षति पहुँचाने का कार्य हो सकता है। पाँचवाँ है—परिहरण। उपकरण है, वो अकल्पनीय काम में ले लेता है। अमुक को कहकर कोई चीज मँगवाना। यों अकल्पनीय उपकरणों का उपभोग करना है, उससे भी चारित्र में क्षति हो सकती है।

ज्ञान की आराधना। साधु जितना समय मिले, स्वाध्याय करता रहे, वह तो अनुकूल है। परंतु प्रमाद आदि के कारण वो ज्ञान की आराधना अच्छी तरह नहीं कर पाता। साधारण चीजें पढ़ने में इतनी रुचि लेता है, जितनी रुचि नहीं लेनी चाहिए, तो मुख्य ग्रंथ नहीं पढ़ पाता। प्रमादी को ज्ञान की आराधना नहीं हो पाती है, तो फिर ज्ञानाराधना में उपघात हो सकता है।

सातवाँ है—दर्शन का उपघात, सम्यक्-दर्शन का उपघात। शंका आदि होते रहते हैं, जो अवांछनीय है, उनसे दर्शन शुद्धि में कमी आ सकती है। चारित्र का उपघात। ऐसे समितियाँ हैं। समितियों में जागरूकता नहीं है, तो चारित्र का घात समितियों के भंग से हो सकता है।

नवम है—अप्रीति उपघात। अप्रीति का घात होने से विनय का घात हो सकता है। जो वंदनीय है, उनके प्रति अप्रीति का भाव आ जाता है, विनयपूर्ण व्यवहार नहीं करता है, तो यह अप्रीति का भाव विनय का उपघात करने वाला हो जाता है। दसवाँ है—संरक्षण उपघात। शरीर, उपकरण आदि में मूर्च्छा हो जाती है। परिग्रह की चेतना जाग जाती है। अपरिग्रह महाव्रत में क्षति हो जाती है। यह मूर्च्छा भी संयम के लिए उपघात है।

इन उपघातों से बचने का उपाय-प्रयास रहे तो विशुद्धि होती है।

ज्ञान आराधना में लक्ष्य है, तो उसके प्रति लगना होता है। तत्त्व ज्ञान में रुचि लेकर के समय लगाएँ तो ज्ञान का विकास हो सकता है। ज्ञान में प्रमाद है, पुरुषार्थ नहीं करता है तो ज्ञान का कैसे विकास हो सकेगा। डिग्री भी विकास का रास्ता है। पर बिना डिग्री वाले भी अच्छे ज्ञान के ज्ञाता हैं। हमारे धर्मसंध में और ज्ञान का विस्तार होते रहे। अभ्यास हो, प्रयास हो।

भाषण की आत्मा ज्ञान है। भाषा का महत्त्व भाषण का शरीर है। ज्ञान का विकास होता रहे। ज्ञान करते-करते संयम की स्थिति हो सकती है। स्वाध्याय एक माध्यम है, जिससे ज्ञान की वृद्धि हो सकती है। आगम निर्माण में कितने कार्य करने वालों का श्रम लगा होगा। आज कितनी सुविधा से हमें आगम प्राप्त है, उनका हम लाभ उठाएँ।

अप्रीति भी नहीं करनी चाहिए। जल्दी से नाराज नहीं होना चाहिए। बात को सुन लो, समझ लो। अप्रीति करने से विनय में कमी आ सकती है। साधु को तो नाराज नहीं होना चाहिए। गृहस्थ भी जल्दी से नाराज न हों। आवश्यक उपकरण साधु के पास रहे। गुरु छोटी-छोटी शिक्षाएँ प्रदान करते रहते हैं, हम उन शिक्षाओं को धारण कर लें तो जीवन अच्छा बन सकता है। संयम का उपघात न हो इसकी सावधानी हमें रखनी चाहिए।

मुख्य नियोजिका जी ने कहा कि दर्शन के चार प्रमुख विषय बनते हैं—ज्ञान मीमांसा, प्रश्न मीमांसा, तत्त्व मीमांसा और आचार मीमांसा। जिसमें अज्ञान होता है, वह तत्त्व को समझ नहीं पाता है। जिसमें ज्ञान का प्रकाश है, वह व्यक्ति प्रकाश की अनुभूति करता है। यह एक दृष्टांत से समझाया।

साध्वी केवलयशा जी ने सुमधुरी गीत एवं अपने भावों की अभिव्यक्ति दी। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

दोषों का प्रायश्चित करने से चारित्र शुद्धि रह सकती है : आचार्यश्री महाश्रमण

भीलवाड़ा, १६ सितंबर, २०२१

श्रुत प्रदाता आचार्यश्री महाश्रमण जी ने मंगल देषणा प्रदान करते हुए फरमाया कि ठाणं आगम में शास्त्रकार ने बल-सामर्थ्य के दस प्रकार बताए हैं। हमारे जीवन में तो बल का बहुत महत्त्व है। बल के बिना आदमी कार्य भी कैसे कर पाए। दस प्रकारों में पाँच तो इंद्रिय बल हो गए। श्रोतेन्द्रिय, चक्षुरिन्द्रिय, घ्राणेन्द्रिय, जिह्वा और स्पर्श इंद्रिय बल।

इंद्रियाँ अपने विषय को ग्रहण करने में समर्थ हैं तो वह इंद्रियों का बल है। इंद्रियाँ अर्थ-ग्रहण बिलकुल नहीं कर सकती हैं, तो फिर वह बलहीनता हो जाती है। शरीर में इंद्रिय ज्ञान माध्यम बनती है। पाँच कर्मेन्द्रियाँ भी हैं। पर ये पाँच इंद्रियाँ ज्ञान का माध्यम है। सुनने, पढ़ने, देखने से कितना ज्ञान हो सकता है। अनुकूल इंद्रियों का होना एक भाग्य की स्थिति है।

छठा बल है—ज्ञानबल। ज्ञान बहुत बड़ा बल है। कंठस्थ ज्ञान भी होता है। धर्म क्षेत्र के सिवाय भी कितने-कितने विद्यालयों, विश्वविद्यालयों में शिक्षण संस्थाओं में ज्ञान विकास गृहस्थ करते हैं। सातवाँ-दर्शन बल। अपनी श्रद्धा-निष्ठा का बल। लक्ष्य व यथार्थ के प्रति निष्ठा, श्रद्धा-आस्था का बल होता है। चारित्र बल-संयम-चारित्र का भी बल होता है। नौवाँ बल है—तपोबल। तपस्या में भी शक्ति-सामर्थ्य हो सकता है। अनेक प्रकार के अनाहार के बल होते हैं। साधना के अनेक रूपों में तप बल किया जा सकता है।

दसवाँ बल बताया—वीर्य बल। शरीर का बल होता है, तो आदमी दूसरों की सेवा-परिचर्या कर सकता है। वचन बल और मन बल भी महत्त्वपूर्ण है। साधु चारित्र में जागरूक रहे। वीर्य शरीर से प्रभव होता है। दस प्राण और दस बल मिली-जुली सी बात है। इन दसों को तीन विभागों में बाँट सकते हैं। इंद्रिय बल, योग बल और मोक्ष बल।

साधु दोष से बचते रहे तो चारित्र की शुद्धि रह सकती है। संयम जीवन में जो प्रायश्चित है, वो एक सर्जरी रूप में छेद प्रायश्चित है। छेद प्रायश्चित के द्वारा शुद्धि का प्रयास करणीय होता है। शुद्धि न हो तो आगे के लिए कठिनाई हो सकती है। साधु-साध्वी, समणी का प्रयास रहे कि चारित्र निर्मल रहे। वर्तमान में संयम में दोष लग सकते हैं, पर प्रायश्चित होता रहे। वर्तमान की परिस्थिति में तो प्रायश्चित और काम का है।

आचार के प्रतिकूल सेवन हो गया, उसकी शुद्धि हो जाए। चारित्र रूपी शरीर ठीक रहे। दोष की आलोयणा होती रहे। दस प्रकार के बल है। हम बलवान भी रहें। अपने बल का अच्छा उपयोग करें, यह हमारे लिए काम्य है।

आज चतुर्दशी है। मर्यादा पत्र वाचन-हाजरी का दिवस है। पूज्यप्रवर ने मर्यादावली का वाचन कर प्रेरणा प्रदान करवाई। हमारे तेरह नियम पाँच महाव्रत, पाँच समिति और तीन गुप्ति की आराधना अखंड चलती रहे। भाषा समिति अच्छी रहे। जागरूकता रहे।

एषणा समिति में भी जागरूकता रहे। अलमारियों की हर पूनम को प्रतिलेखना हो जाए। चार काल का स्वाध्याय होता रहे। चर्चाओं के प्रति जागरूक रहें। ये सब हमारे चारित्र को संपोषण देने वाली बन जाती है। आचार्य भिक्षु द्वारा प्रदत्त पाँच मर्यादाएँ हमारे धर्मसंध के पिलर है। शिरोमणी मर्यादा है—सर्व साधु-साध्वियाँ एक आचार्य की आज्ञा में रहें।

हाजरी की शिक्षाएँ हमारे सभी के लिए अच्छा जीवन जीने में सहयोगी बन सकती है। मुनि शरीर को छोड़ दें पर धर्म शासन को न छोड़ें। इन दिशा-निर्देशक तत्त्वों के प्रति हमारी जागरूकता बनी रहे।

मुनि ज्योतिर्मय जी, मुनि मार्दव जी व मुनि मोक्ष जी से लेख पत्र वाचन का निर्देश दिए। सभी चारित्रात्माओं द्वारा लेख पत्र का वाचन किया गया। नवदीक्षित व बाल साधु-साध्वियों को चार गीतिकाएँ याद करने का निर्देश फरमाया।

हमारे भाग्य बड़े बलवान, मिला ये तेरापंथ महान। गीत के एक पद्य का सुमधुर संगान पूज्यप्रवर ने करवाया। पूज्यप्रवर ने तपस्या के प्रत्याख्यान एवं सम्यक्त्व दीक्षा ग्रहण करवाई।

साध्वीप्रमुखाश्री जी ने कहा कि आचार्यप्रवर साधु-साध्वियों, समणियों एवं गृहस्थों को समय-समय पर अनेक कोणों से शिक्षण-प्रशिक्षण देते रहते हैं। तेरापंथ के आचार्य इस बात के प्रति जागरूक रहते हैं कि चतुर्विध धर्मसंध में अध्यात्म का उजाला फैलता रहे। जीवन का स्तर उन्नत होता रहे। और जो लक्ष्य जिसने निर्धारित किया है, उस दिशा में प्रगति करता रहे।

मुख्य नियोजिका जी ने कहा कि दुःख में भगवान की स्मृति निरंतर रहेगी। यह दुःख जीव ने अपने ही प्रमाद से प्राप्त किया है। अप्रमाद से जीव दुःख की निवृत्ति करता है। मुनि ज्योतिर्मय जी ने गीत का संगान किया।

कार्यक्रम का संचालन करते हुए मुनि दिनेश कुमार जी ने बताया कि साधु ज्ञान में तर्क करे और आज्ञा-निर्देश पालन में सतर्क रहे।

✦ एक चक्षु है और उसे धर्म कहा गया है। अविवेकपूर्वक किया गया कार्य अनर्थकारी हो सकता है।
– आचार्यश्री महाश्रमण

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
27 सितंबर-3 अक्टूबर, 2021

✦ *अच्छा कार्यकर्ता वही हो सकता है जो अनुशासनप्रिय होता है और स्वयं पर होने वाले अनुशासन को सहन कर सकता है।*
—आचार्यश्री महाश्रमण

आचार्य भिक्षु का २१९वाँ चरमोत्सव

भौतिक और आर्थिक विकास के साथ नैतिक विकास हो : आचार्यश्री महाश्रमण

भीलवाड़ा, १८ सितंबर, २०२१

भाद्रवा शुक्ला द्वादशी/त्रयोदशी। तेरापंथ के आद्यप्रवर्तक आचार्यश्री भिक्षु का चरमोत्सव, महाप्रयाण दिवस त्रयोदशी। आज ही के दिन महामना भिक्षु का सिरियारी में महाप्रयाण हुआ था। जिसे हमारे चतुर्थाचार्य जयाचार्य ने चरमोत्सव के रूप में एक उत्सव प्रदान किया था। आज परम पावन भिक्षु का २१९वाँ चरमोत्सव आयोजित है।

आचार्यश्री भिक्षु के परंपर पट्टधर, वर्तमान के भिक्षु आचार्यश्री महाश्रमण जी ने श्रद्धासुमन अर्पित करते हुए फरमाया कि आचार्य को उपमित करने के लिए, विराटता को बताने के लिए सूर्य का उपयोग शास्त्रकार ने किया है। इंद्र का भी उपयोग करना पड़ा तब जाकर शास्त्रकार मानो आचार्य को प्रस्तुत करने में समर्थ हुए। आचार्य का कितना ऊँचा स्थान है।

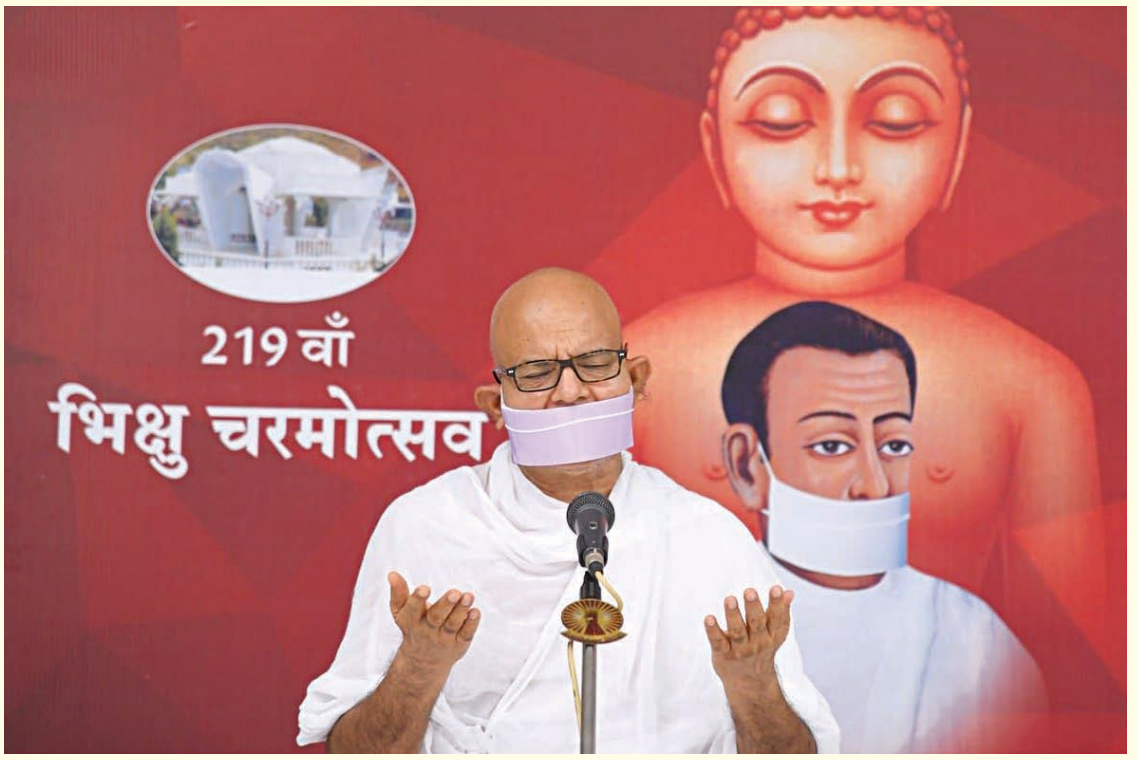

आज परमपूज्य, परम वंदनीय आचार्य भिक्षु का महाप्रयाण दिवस है, जिसे हम चरमोत्सव कहते हैं। आचार्य भिक्षु का व्यक्तित्व विशिष्ट था। उनका श्रुत ज्ञान भी सामान्य नहीं था। उनका अपना ज्ञान, फिर प्रस्तुतिकरण का तरीका विशेष था। नव पदार्थ की चौपाई का स्वाध्याय करते-करते अच्छी बातें मिल सकती हैं। ज्ञात बातों की पुनरावृत्ति हो सकती है।

अनेक ग्रंथ आचार्य भिक्षु के हैं। इनसे जाना जा सकता है कि आचार्य भिक्षु का ज्ञान कितना निर्मल रहा होगा। उनकी शील संपदा को देखें, आचार पक्ष को देखें तो उनकी क्रांति में दो मूल तत्त्व आचार और विचार। उनमें शील की सौरभ का भी आभास किया जा सकता है। उनमें ज्ञान-श्रुत रूपी सूर्य का तेज था। उनकी बुद्धि बड़ी निर्मल थी।

ग्रंथों का अध्ययन करना एक बात है, बुद्धि की स्फूरणा होना अलग बात है। ग्रंथों के पढ़ने के साथ बुद्धि का योग हो तो वो ज्ञान और विभूषित हो सकता है। आचार्य भिक्षु के सामने विरोध भी आए। विरोधों को भी झेलने की धृति-शक्ति हो। उनका विरोध चलता रहा, वे अपने पराक्रम से आगे बढ़ते रहें।

आखिर चलते-चलते वि०सं० १८५६ का चतुर्मास पाली में किया। अगला चातुर्मास सिरियारी करने पधारे। सात साधुओं के साथ चातुर्मास किया। उस समय सिरियारी में भी अनेक घर तेरापंथी के थे। ७८वें वर्ष में उनकी चाल तेज थी। श्रावण मास में स्वास्थ्य में श्रान्तता लगने लगी।

भाद्रवा सुदी चतुर्थी को लगने लगा कि अब समय आ गया है, मृत्यु की तैयारी करने लगे। एकादशी को दवा का आगार रख आहार का त्याग कर दिया। द्वादशी को कच्ची हाट से पक्की हाट पधारे। मुनि रायचंद जी ने कहा कि स्वामिन! लगता है, पुद्गल क्षीण पड़ रहे हैं। आचार्य भिक्षु ने अनशन स्वीकार कर लिया। बाद में संकेत से लगता है कि उनको विशेष ज्ञान, अवधि ज्ञान भी हुआ होगा।

कायोत्सर्ग की मुद्रा में विराजे, पुद्गल क्षीण हुए, आत्मा देह मुक्त हो गई। वि०सं० १८६०, मंगलवार, भाद्रवा शुक्ला त्रयोदशी को स्वामीजी ने महाप्रयाण कर दिया। ऐसे एक विशिष्ट संत हमारे धर्मसंघ को प्रथम आचार्य के रूप में प्राप्त हुए। दुनिया का मानो भाग्य होता है कि बीच-बीच में कभी-कभी यत्र-तत्र महापुरुष पैदा होते रहते हैं। वे आते हैं, कुछ करते हैं, दुनिया को कोई राह, चाह दिखा देते हैं। और कभी आगे बढ़ जाते हैं।

जीवन में चाह भी हो, राह भी हो और उत्साह जग जाए, फिर आदमी कहीं पहुँच सकता है। आज के चरमोत्सव के दिन मैं महामना भिक्षु के प्रति बार-बार श्रद्धार्पण करता हूँ। चरमोत्सव के उपलक्ष्य में पूज्यप्रवर ने स्वरचित गीत—'जिनशासन, पंचानन को, मेरा सविनय शत्-वंदन।' का सुमधुर संगान किया।

आज तो भिक्षु स्वामी का चरमोत्सव का दिन है। आगे भिक्षु स्वामी के जन्मोत्सव का तीन सौ वाँ दिवस लगने का दिन आने वाला है।

(शेष पृष्ठ १० पर)

पूज्यप्रवर की सन्निधि में पहुँचे लोकसभाध्यक्ष ओम बिड़ला

अध्यात्म की साधना से अनाबाध सुख प्राप्त हो सकता है : आचार्यश्री महाश्रमण

भीलवाड़ा, १४ सितंबर, २०२१

तीर्थंकर के प्रतिनिधि आचार्यश्री महाश्रमण जी ने पावन प्रेरणा प्रदान करते हुए फरमाया कि ठाणं आगम में कहा गया है—आदमी और प्राणी सुख पाने की इच्छा रखता है। शास्त्रकार ने सुख के दस प्रकार बताए हैं।

दस सुखों में पहला आरोग्य, निरोगता एक सुख है। पहला सुख निरोगी काया। शरीर निरामय रहता है तो साता रहती है। दूसरा सुख है—दीर्घ आयुष्य। लंबा जीवन-काल प्राप्त करना भी अच्छे रूप में प्राप्त करना होता है।

तीसरा सुख है—आध्यता, गृहस्थ का जीवन हो। धन की प्रचुरता का होना भी सुख है। घर में माया हो। चौथा सुख है—काम, पाँचवा सुख है भोग। पाँच इंद्रिय विषय है, इनमें शब्द और रूप काम कहलाते हैं, वर्ण, गंध, स्पर्श भोग कहलाते हैं। दो इंद्रियाँ कामी हैं, तीन इंद्रियाँ भोगी हैं। श्रोतेंद्रिय, चक्षुरिन्द्रिय को कामी और घ्राणेन्द्रिय, रसेंद्रिय और स्पर्शनेन्द्रिय को भोगी कहा गया है।

छठा सुख है—संतोष। छठा सुख आध्यात्मिक स्तर का सुख है। मोह ग्रस्त मूढ़ लोग हैं, वे असंतोष में जीने वाले होते हैं। पंडित ज्ञानी है, अध्यात्मिक रूप से ज्ञानी है, वे संतोष को धारण करने वाले होते हैं।

संतोष प्राधान्य जीवन जीने वाला उत्तम पुरुष होता है। निरोग रहना मनुष्यता का सार है। धर्म का सार है—सत्य। विद्या निश्चय सार है। सुख का सार है—संतोष। सातवाँ सुख है—अस्ति, मेरे पास है। जब-जब जो प्रयोजन होता है, उसकी तब-तब पूर्ति हो जाना। आठवाँ सुख है—शुभ भोग। रमणीय विषयों का भोग करना।

नौवाँ सुख बहुत आध्यात्मिक है—निष्क्रमण करना। प्रव्रज्या सुख, साधु को जो सुख होता है, वो उच्च सुख होता है। राजा के राजा को जो सुख नहीं मिले, देवराज इंद्र को भी वो सुख नहीं मिले, वे सुख यहाँ साधु को प्राप्त हो सकता है।

दसवाँ सुख तो परम सुख बता दिया—अनाबाध। जन्म-मृत्यु आदि बाधाओं से रहित मोक्ष का जो सुख है, वो परम सुख है। इन दसों सुखों में अनाबाध तो शुद्ध आत्मिक सुख है। प्रव्रज्या व संतोष भी आध्यात्मिक स्तर का सुख है। सात सुख भौतिक सुख है। अनाबाध सुख के लिए कहा गया है कि मनुष्यों और सब देवों को वह सुख नहीं मिलता, जो सुख अन्याबाध स्थिति को प्राप्त सिद्धों को जो सुख मिलता है।

आरोग्य तो मध्यम कोटि का सुख है। स्वास्थ्य अच्छा है, तो आदमी परिश्रम कर सकता है। यह सुख साधु को भी चाहिए और गृहस्थों को भी चाहिए। दीर्घ आयुष्य भी एकदम भौतिक सुख भी नहीं, आध्यात्मिक विकास है, लंबा आयुष्य प्राप्त हो। आध्यता काम भोग, अस्ति भी भौतिक सुख है। हमारा अनाबाध सुख पाने का लक्ष्य रहे।

दिल्ली विधानसभा के स्पीकर रामनिवास गोयल पूज्यप्रवर की सन्निधि में

अनाबाध सुख का कारण है, प्रव्रज्या लेना, निष्क्रमण करना। सम्यक्त्व भी अनाबाध की ओर बढ़ाने वाला सुख है। चारित्र और सम्यक्त्व अनाबाध सुख के हेतु हैं। इन दस सुखों में जो परम सुख है, उस अनाबाध सुख के इच्छावान, लक्ष्यवान, पुरुषार्थवान रहें, उस दिशा में आगे बढ़ते रहें। अध्यात्म की साधना के द्वारा अनाबाध सुख प्राप्त हो सकता है। पूज्यप्रवर ने तपस्या के प्रत्याख्यान करवाए।

(शेष पृष्ठ १० पर)

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के लिए मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक - **संदीप कोठारी** द्वारा मै. जी.के. फाइन आर्ट प्रेस, सी-1, एफआईएफ, पटपड़गंज, औद्योगिक क्षेत्र, दिल्ली-110092 से मुद्रित तथा 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली - 110 002 से प्रकाशित। कार्यकारी संपादक : **दिनेश मरोठी**